वीणा-ग्रंथि

सुमित्रानंदन पंत



वीणा-ग्रंथि

सुमित्रानंदन पंत



ग्रंथ-संख्या—१४६
प्रकाशक तथा विक्रेता
भारती-भण्डार
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

द्वितीय संस्करण
सं० २००७ वि०
मूल्य ३)

मुद्रक
महादेव एन० जोशी
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

जाकी इहाँ, चाहना है

स्व० श्री केदार पांडेय : हार्दिक श्रद्धांजलि

२५ मार्च १९८३ के श्री केदार पांडेय का निधन से भोजपुरी के एगो विशाल स्तम्भ टूट गइल। केदार पांडेय जी भोजपुरी-आन्दोलन के प्रबल समर्थक आ भोजपुरी भाषा, साहित्य अउर संस्कृति के गौरवपुरुष रहन। उनका शक्तिशाली व्यक्तित्व के केन्द्र बनाके भोजपुरी के अनगिनित सपना तइयार होत रहन स, बाकिर अफसोस कि काल उनका के हमनी से ओही घरी छीन लेलस जब उनकर जरूरत सबसे जादे रहे।

श्री केदार पांडेय के जनम पच्छिमी चम्पारन के तउलाहा नामक गाँव में १४ जून १९२० के भइल रहे। उनकर पढ़ाई-लिखाई पहिले बिहार में आ ओकरा बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भइल। उहाँ से एम० एस—सी० अउर कानून के डिग्री लेके ऊ सन् १९४३ का भारत-छोड़ो-आन्दोलन में भाग लेलन आ जेल गइलन। १९४५ से ४८ तक पांडेय जी वकालत कइलन आ साथे-साथे चम्पारन का मजदूर-आन्दोलन के भी काम करत रहलन। सन् १९४६ से ५२ तक ऊ चम्पारन चीनी-मिल-कर्मचारी-संघ के महासचिव रहन। १९५२ में पांडेयजी बिहार विधानसभा के सदस्य चुनल गइलन। १९५७ में ऊ बिहार के परिवहन अऊर सामान्य प्रशासन विभाग के मंत्री भइलन। एकरा बाद सिंचाई आ विद्युत् विभागन के मंत्री भइलन। १९७१ में पांडेयजी बिहार के उद्योग-मंत्री आ ७२-७३ में मुख्य मंत्री भइलन। १९८० में ऊ बेतिया-क्षेत्र से लोक-सभा के सदस्य चुनल गइलन आ भारत-सरकार के रेलमंत्री आ सिंचाइ-मंत्री रहलन। एह बीच में पांडेय जी भारतीय-राष्ट्रीय-मजदूर-कांग्रेस के बिहार-शाखा का उपाध्यक्ष-पद के भी सुशोभित कइलन। एह तरह से एगो कुशल मजदूर-नेता आ राजनीतिज्ञ का रूप में श्री केदार पांडेय बिहार आ देश के चालिस बरिस तक जे सेवा कइलन ऊ भुला ना सके।

पांडेय जी सुभाव के सरल आ छल-कपट से दूर रहेवाला राजनेता रहन। अइसन लोगन के संख्या देश का राजनीति में कम होत जा रहल बा। संकल्प के अइसन धनी कि जब मुख्य मंत्री रहलन त बिहार का विश्वविद्यालयन में परीक्षा में बरिसन से चलत कदाचार के अचानक बन्द कर देलन, आ ई चमत्कार आज नियन कानून बनाके, कदाचार के संज्ञेय अपराध घोषित करके ना, खाली शिक्षक-समाज के विश्वास अर्जित करके। उनकर लोकप्रियता कुरसी से ना, उनका व्यक्तित्व से रहे।

केदार पांडेय जी के भोजपुरी-सेवा उनका राजनीतिक उपलब्धियन से कम गौरवपूर्ण ना रहल। ऊ पटना में सन् १९७५ में आयोजित अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का दोसरका अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष रहन जेकरा बाद तुरन्ते ऊ पटना में भोजपुरी अकादमी के स्थापना कइलन। राज्य सरकार द्वारा सन् १९७८ में भोजपुरी अकादमी स्थापित होखे के पहिले तक पांडेयजी के बनावल गैर-सरकारी अकादमी भोजपुरी के काफी काम कइलस। वर्तमान सरकार भोजपुरी-अकादमी के अग्रदूत का रूप में पांडेय जी के याद भोजपुरी भाषी जनता का हृदय में बराबर बनल रही। पटना में स्थापित भोजपुरी-विद्यापीठ आ विश्व-भोजपुरी-सम्मेलन उनके प्रेरणा आ प्रसाद रहे। पटना में कबीर-शोध-संस्थान नाँव से एगो भोजपुरी-शोध-संस्था बनावे के उनकर योजना रहे। बिहार सरकार चाहे भोजपुरीभाषी जनता अगर एह कल्पना के साकार कर सके त लोक में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के बड़हन सेवा होई आ परलोक में पांडेयजी का आत्मा के सन्तोष होई।

भोजपुरी-अकादमी-परिवार का ओर से स्व० केदार पांडेय जी के हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित बा।

स्व० श्री हरेन्द्रदेव नारायण : अभाव, जे ना भरी

भोजपुरी का प्रथम महाकाव्य—कुँवरसिंह—के रचयिता श्री हरेन्द्रदेव नारायण के बहत्तर बरिस का अवस्था में २ फरवरी ८३ के पटना में स्वर्गवास हो गइल। भोजपुरी के एगो अनमोल रतन लुटा गइल। श्री हरेन्द्रदेव जी, जिनका के लोग आतमीयता से हरिजी कहत रहे, हिन्दी आ भोजपुरी के उच्च कोटि के कवि, भोजपुरी, हिन्दी अउर अँगरेजी साहित्यन के जानल-मानल विद्वान, आ एह तीनों भषन के प्रखर वक्ता रहन। एह तीनों भषन में समान रूप से काव्यरचना कर सकेवाला उनका अइसन प्रतिभाशाली व्यक्तित्व अब कहाँ मिली! एह घरी जब अपना उत्थान खातिर भोजपुरी चारू ओर से आपन बिखरल शक्ति बटोर रहल बिआ, हरिजी का चल गइला से एगो बड़हन अभाव हो गइल जे भरल ना जा सके।

सारन जिला का एगो प्रतिष्ठित आ साहित्यिक परम्परावाला परिवार में २४ अक्टूबर १९१४ ई० के श्री हरेन्द्रदेव नारायण के जनम भइल रहे। उनकर पिता श्री रघुवीर नारायण भोजपुरी के प्रसिद्ध कवि रहन जिनकर 'बटोहिया' शीर्षक कविता अँगरेजी-राज का समय में करोड़न देशभक्तन का कंठ में बस गइल रहे। एह कविता के भोजपुरी भाषा के राष्ट्रगीत कहल जा सकेला। ओह घरी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन प्रायः एही राष्ट्रगीत से आरम्भ होत रहन

स। रघुवीर नारायण जी के चाचा श्री रामबिहारी सहाय 'बिहारी' उर्दू, व्रजभाषा आ भोजपुरी के अच्छा कवि आ शिवभक्त रहन। उनकरो पुरनियाँ श्री ब्रह्मदेव नारायण 'ब्रह्म' मधुर भाव के भक्त रहन आ भोजपुरी अउर ब्रजभाषा में कवित्त-सवैया आ निरगुन लिखले बाड़न। भक्ति, राष्ट्रीयता आ साहित्य-साधना के ई परम्परा श्री हरेन्द्रदेव नारायण के पारिवारिक उत्तराधिकार में मिलल। उनकर धर्मपत्नी श्रीमती प्रकाशवती नारायण हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार आ कवयित्री हईं। आ उनकर दूगो भतीजा लोग—श्री अवधेन्द्रदेव नारायण आ श्री सीतेन्द्रदेव नारायण—हिन्दी के प्रतिभाशाली कवि हवन। अइसन सारस्वत परिवार में देहरी दीपक नियन हरेन्द्रदेव जी रहन जिनका व्यक्तित्व से आगे आ पाछे, दूनों ओर का पीढ़ियन के कृतित्व आलोकित हो रहल बा। सभा-सोसाइटी से अलगा रहके मौन भाव से साहित्य-देवता के आराधना करेवाला भइलो प मित्रन का आग्रह से ऊ १९७२ में सारन-जिला-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्षता कइलन। आ १९८० में मोतिहारी में आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा का अध्यक्षता में आयोजित अखिल-भारतीय-भोजपुरी-साहित्य-सम्मेलन का पँचवाँ अधिवेशन के उद्घाटन कइलन। १९८१ में भोजपुरी-अकादमी उनका साहित्य-साधना का उपलक्ष में उनका के सम्मानित कइलस।

हरेन्द्रदेव जी लगभग पचास बरिस तक हिन्दी आ भोजपुरी के लगातार सेवा कइलन। १९३९ ई० में उनकर बाँसुरी नामक गीत प्रकाशित भइल रहे जेकरासे उनकर बहुत नाम भइल। ओकरा बाद उनकर सैकड़न गीत हिन्दी का पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित भइलन स। छायावाद के अस्त-काल में उनकर उदय भइल रहे जेकरा बाद हिन्दी कविता में प्रगतिवाद आ प्रयोगवाद के चलती रहल, बाकी एह वादन से फरका हटके उनकर कविता के धारा आपन राह बनवलस। उनका काव्य में शाश्वत जीवन-सत्य के अभिव्यक्ति बा, सामयिक तथ्यन से उनकर चिन्ताधारा बहुत प्रभावित नइखे भइल। गति आ संघर्ष जीवन के चिरन्तन सत्य ह—

नाविक, यह सागर है, आँधी है
तुमने निज नाव कहीं बाँधी है
आँधी से, लहरों से द्वन्द करो
जीवन के विष को मकरन्द करो
रात हुई, गान नहीं बन्द करो
निर्झर-स्वर प्रखर प्राण-छन्द करो।

हरेन्द्रदेव नारायण जीवन-संघर्ष आ गहन आस्था के कवि हवन। उनका कविता में अभाव के संवेदना जहाँ भी आइल बा, पूर्वपक्ष का रूप में। ओकर उत्तर पक्ष जीवन का प्रति भरपूर आशा आ विश्वास से भरल बा—

भर द तूँ बंसी में गान
बहुत देर भइल।
मुकफुक जियरा में परान
बहुत देर भइल।
आइल बसंत सब फुलाइल बा बगिया
अंग-अंग जोर करे कामना के अगिया
मोर सोर करे लागल महुआ के बन में
कोइल, भिंगिराज, पपिहा मधुबन में
जिनिगी में भर द अभियान
बहुत देर भइल।

हिन्दी में ओजस्वी आ मार्मिक गीतिकार का रूप में प्रसिद्ध भइला का बहुत बाद, सन् १९५७ में, हरेन्द्रदेव जी भोजपुरी में कुँवर सिंह महाकाव्य के रचना करके भोजपुर के वीर-शिरोमणि बाबू कुँवर सिंह के देशभक्ति आ बलिदान के लोकप्रिय गाथा का माध्यम से मातृभाषा का मन्दिर में जवन नैवेद्य अर्पित कइलन ओकर जतना सराहना कइल जाय, कम बा। मानववाद आ राष्ट्रीयता के संस्कार इनकर पारिवारिक रहे जे भारतीय-स्वतन्त्रता-संग्राम का सयबरिसी के समय ओह संग्राम के अद्वितीय नेता के जयगान का रूप में भोजपुरी में व्यक्त भइल। हरेन्द्रदेव जी के कुँवर सिंह महाकाव्य ह बाकी ओकरा में गीति-तत्त्व प्रधान बा। ओकर भाषा, कवि का शब्द में, 'परिष्कृत भोजपुरी' ह जेकरा में तत्सम शब्दन के सहज ढंग से प्रयोग भइल बा।

हरेन्द्रदेव जी के साहित्यिक व्यक्तित्त्व बहुआयामी रहे। गीतिकाव्य, मुक्तक आ प्रबन्धकाव्य का अलावे उनका कलम से हिन्दी में रेखा उपन्यास आ सुबह का सपना नाटक भी प्रकट भइलन स। जवानी की ललकार आ स्वतन्त्रता के बाद के दिन में निबन्धकार का रूप में अउर सुचिन्तित निबन्ध में आलोचक का रूप में हरिजी के दर्शन होता। उनकर सैकड़न प्रकाशित-अप्रकाशित कवितन के संग्रह प्रकाशित कइल जाय त हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य के बड़ा उपकार होई।

साहित्यकार के जीवन अइसहूँ अभाव से भरल रहेला। बाकी हरेन्द्रदेव जी अइसन स्वाभिमानी साहित्यकारन के जीवन संघर्ष करते बीतेला। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् का साहित्यकार-निधि से महज तीन सौ रुपया के माहवारी पेंशन हरेन्द्रदेव जी के, जीवन यात्रा खातिर, मिलत रहे। घोर अभाव में रहतो जे अपना भाव-साधना से कबो ना डिगल आ अपना प्रेरक साहित्य से समाज के निःस्वार्थ सेवा करत चल गइल, आइसन तपस्वी के अकादमी-परिवार आपन श्रद्धांजलि पत करऽता।

ई अभाव अब ना भरी !

—विश्वनाथ सिंह

बिजुरी-बादर : माटी-सोना

□ चन्द्रशेखर मिश्र

[माई जसोदा जब सुनली कि उनकर दुलरुआ पूत कृष्ण राधा का पाछा पागल हो गइल बा त मन में गुनावन कइली कि अब का करे के चाहीं। कुल्हि दाइ-उपाइ कइके हारि गइली बाकी बेटवा काहे के माने। एक दिन सोंचली कि जब पुतवे हाँथ से निकलि जाई त ई बड़का घर आ राज-पाट का होई। कस न हमहीं चलीं रधवा के माई-कीरति-से हाथ जोड़ जोरि के बिनती करीं कि आपन बिटियवा हमरे बेटउआ बदे देइ देसु। फेरि मन में बात आइल कि हमार बेटवा त करिया बा आ कीरति के बिटिया गोर; मानी कि ना मानी। बाकी बिनती करे में कवन बेजायँ बा। बेटा के मोह ना मानल। महतारी गइल आ कीरति से कहलस—

जसोदा—

राधे बदे पगलाइल बा तकिया तर सोवेला चित्तर धइके।
पूत बुढ़ाई में जउ तजिहैं तब का करबे बड़का धर लेइके॥
ई उपकार न भूलब कीरति मैं मिलबे नित माथ ओनइके।
राउर बिजुरी चाहीं हमैं, हम कीनब आपन बादर देइके॥

कीरति—

अइलू मोरे घर, कइलू कृपा, तनी बइठि जुठारि द माखन-दोना।
बाकी पियारि हमें रधवा तस, लागें तोहै जस स्याम सलोना॥
अइसन मूरख ना पइबू, चलि खोजि के देखि ल गाउँ के कोना।
जा अपने घर सोंधे चली, हम माटी के मोल न बेंचब सोना॥

—अस्सी, वाराणसी

गीत

□ अविनाश गौतम

चलऽ, चलीं कहीं बनवां के पार हिरना ।
एहि बनवाँ में बरिसे अँगार हिरना ।।

रेत भइली नदिया, पहार भइली धरती
जरल बधरिया, उसर भइल परती
एहि अगिया में दहके कछार हिरना ।।

निंदिया के महँगी, सपनवाँ के चोरी
एहि पार धनियाँ त ओहि पार होरी
बीचे कँटवा लागल बटमार हिरना ।।

बड़की बखरिया प बरिसे चँदनियाँ
दियना जराइ केहू काटेला रयनियाँ
कबो नेहिया के होला ना पुछार हिरना ।।

गितिया ना चहकी, ना महकी कजरवा
बाची नाहीं लजिया, ना अँटिहें अँचरवा
इहाँ लुटि जाई सोरहो सिंगार हिरना ।।

—नवाब यूसुफ रोड, इलाहाबाद

●

रूपिम : रचना अउर व्यवहार का विचार से

□ लक्ष्मणप्रसाद सिनहा

व्याकरणिक विश्लेषण में रूपिम सबसे छोट सार्थक इकाई ह। अँगरेजी में रूपिम के मॉरफीम (Morpheme) कहल जाला। भाषाविज्ञानी लोग एह बात के मान लेले बाड़न कि १९वीं शताब्दी का पहिले पच्छिमी देशन का व्याकरण में रूपिम के जानकारी ना रहे काहे कि शब्दन के रूप आ बनावट के विधि-विधान के सही-सही विश्लेषण प्राचीन भा मध्य युग तक ओहलोग किहाँ ना भइल रहे। साँच पूछीं त ई भारत का भाषा-विज्ञानी लोगन के देन ह। ई लोग व्याकरणिक विश्लेषण में रूपिम के महत्त्व प्रतिपादित कइले बा। भारत का भाषाविज्ञानी लोगन में पाणिनि के सबसे ऊँच स्थान बाटे। सबसे पहिले ऊहे व्याकरण का सबसे छोट इकाई के बात कइलन। लेकिन पाणिनि ओकर नाँव पद रखलन।

आधुनिक काल में पच्छिम समेत लगभग सब देशन के भाषाविज्ञानी लोग रूपिम के महत्त्व मान लिहल। ई लोग अनुभव कइल कि सबसे छोट इकाई के ध्यान में राखिके अगर व्याकरण के विश्लेषण कइल जाय त भाषाशास्त्र खातिर ई सबसे महत्त्व के बात होई। कवनो भाषा का व्याकरण के विश्लेषण करत खानी ओकरा सबसे छोट अंश के खोज कइल ओह भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन के आधार प्रस्तुत कइल ह। धीरे-धीरे रूपिम के महत्त्व अतना व्यापक भइल कि लोग एकराके व्याकरण के अइसन अंश माने लागल जेकराके छाँटल ना जा सके। सवाल उठल कि व्याकरण में रूपिम जरूरी काहे वा। भाषा में वाक्य बनावे खातिर जब शब्द से काम चलिए जाई त फिर रूपिम के कवन जरूरत बा? व्याकरण के सबसे छोट इकाई रूपिमे काहे ह? वाक्य त शब्दे से बनावल जाला। तब व्याकरण के सबसे छोट इकाई शब्दे के मानल जाय त का कठिनाई बा?

कठिनाई त प्रत्यक्षे बा। यदि शब्द सबसे छोट इकाई मान लिहल जाय त प्रत्यय-परसर्ग वगैरह के कवन स्वरूप होई? ई प्रत्यय-परसर्ग अपने-आप त अर्थवान नइखन स, बाकीर अर्थहीनो नइखन स। सार्थक शब्दन का साथे जब इन्हनीके योग होला तब अर्थ पूरा साफ हो जाला।

परम्परागत व्याकरण में शब्द के दूगो भेद मिलेला—निरर्थक अउर सार्थक। निरर्थक के उदाहरणस्वरूप फट-फट, खट-खट, ठक-ठक वगैरह शब्द

दिहल गइल बाड़न स। भाषाविज्ञान एहके सहीं नइखे मानत। भाषा-विश्लेषण में **फट-फट, खट-खट, ठक-ठक** आदि अनुरणनवाचक संज्ञाशब्द हवन स। इन्हनीके निरर्थक ना कहल जा सके। इन्हनीमें भाव प्रगट करे के पूरा क्षमता वर्त्तमान बा। अब सार्थक शब्द के देखल जाय। परम्परागत व्याकरण का मोताबिक **राम, सुन्दरता, सपूत, कृपापात्र,** अउर **सच्चिदानन्द** आदि शब्द हवन स। अब इन्हनीके यदि सबसे छोट इकाई मानल जाय त एगो कठिनाई जरूर होई। सवाल उठी कि का एह कुल्हि शब्दन के रूप-रचना एके तरह से भइल बा। यदि **राम** शब्द के खंडित कइल जाय त खंड अर्थवान ना रहिहन स लेकिन **राम** का अलावे ऊपर दिहल बाकी सभ शब्दन के आसानी से विभाजित कइल जा सकेला। एह शब्दन के रूपरचना एह तरह से बा—

१. राम (राम + ०)

२. सुन्दरता (सुन्दर + ता) = मूल + परप्रत्यय

३. सपूत (स + पूत) = पूर्व-प्रत्यय + मूल

४. कृपापात्र (कृपा + पात्र) = मूल + मूल

५. सच्चिदानन्द (सत् + चित् + आनन्द) = मूल + मूल + मूल

ऊपर का विश्लेषण से ई बात साफ होता कि ई कुल्हि शब्द त हवन स बाकिर सभन के रूपरचना समान ढंग से नइखे भइल। **राम** एगो स्वतंत्र शब्द ह। **सुन्दरता** में **सुन्दर** शब्द अर्थ-वान बा, बाकिर एकर **उत्तरांश** अपने-आप अर्थवान नइखे। एकरा उल्टा **सपूत** के उत्तरांश अर्थवान बा बाकिर पूर्वांश अपने-आप अर्थवान नइखे। **कृपापात्र** एगो स्वतंत्र शब्द ह, बाकिर ई सामासिक शब्द ह। दू शब्दन का योग से एकर रचना भइल बा। ई दूनों शब्द अपना-आप में अर्थवाने ना बलुक अपने-आप में पूरा भी बाड़न स। एही तरह के हालत **सच्चिदानन्द** के बाटे। **सच्चिदानन्द** जवना तीन शब्दन का योग के प्रतिफलित रूप ह ऊ तीनों स्वतंत्र शब्द हवन स, अउर अपने-आप में पूरा भी। एहसे यदि शब्द व्याकरण के सबसे छोट इकाई मान लिहल जाय त ऊपर का विश्लेषण में दिहल गइल रूप **ता** अउर **स** के कवना कोटि में रखल जाई? फेनु एक शब्द भइला का कारण **कृपापात्र** यदि व्याकरण के सबसे छोट इकाई मानल जाय त ओकरा छोट अंश **कृपा** अउर **पात्र** खातिर व्याकरण में कवन नाम दिहल जाई? ईहे सवाल **सच्चिदानन्द** का साथे भी उठी। एहसे शब्द के बजाय **रूपिम** के सबसे छोट इकाई मान लिहला पर एह सब समस्या के समाधान आसानी से हो जाता।

रचना आ व्यवहार का विचार से रूपिम के आसानी से दू भाग में बाँटल जा सकेला—(क) मुक्त, अउर (ख) बद्ध। रूपिम चाहे मुक्त होखे

चाहे बद्ध, अतना सोरहो आना सही बा कि एकरा सत्ता के सुरक्षित राखत एहके अउर छोट रूप में बाँटल ना जा सके।

अमरीकी भाषाविज्ञानी मुक्त रूप खाति फार्मेंट (Formant) शब्द के व्यवहार करेलन जा आ सिर्फ बद्ध रूप खातिर रूपिम के। ओह हालत में मुक्त रूप के व्यवहार त भाषा का मूल रूप खातिर सम्भव बा, बाकिर बद्ध रूप के व्यवहार सिर्फ प्रत्ययन खातिर कइल जा सकेला। ओह हालत में मूल रूप से रूपिम के कवनो संबंध ना रह जाला, काहे कि आजकाल के अमरीकी भाषाविज्ञानी लोग सिर्फ बद्ध रूप के रूपिम मानेला, मुक्त रूप के ना। मुक्त रूप के ऊ लोग फार्मेंट कहेला। कवनो अर्थवान शब्द के मूल रूप त मुक्त होई, बाकिर ई बात असंगत बुझाता कि मुक्त रूप का सबसे छोट अंश के रूपिम ना मानल जाय। साँच बात त ई बा कि फार्मेंट से भी रूप के अर्थ निकलत बा, काहेकि ई शब्द अँगरेजी के फार्म (Form) शब्द से बनल बा। एहसे मुक्त अउर बद्ध का रूप में रूपिम के वर्गीकरण बिलकुल उचित बुझाता।

मुक्त रूपिम

मुक्त रूपिम वाक्य में कवनो शब्द के ओइसन स्वतंत्र, अर्थवान रूप ह जेहके अउर छोट रूप में बँटला पर ओकर अस्तित्व सुरक्षित ना रह सकी। वाक्य में एकर रूप पूरा स्वतंत्र होला। आपन सत्ता साबित करे खातिर मुक्त रूप के कवनो सहायक के जरूरत ना पड़े। एकरा उच्चरित रूप के निर्माण भाषा में स्वतंत्र रूप से, बिल्कुल अलग, होला। एह तरह से सब अर्थवान आकार भाषावैज्ञानिक रचना के सीमा निश्चित करेलन स। भोजपुरी में **आम, केला, गाय, ढोल** आदि बिना कवनो संयोजन के अर्थवान बाड़न स। एहसे अइसन शब्दन के, व्यवहार में अइला पर, मुक्त रूपिम भी कहल जा सकेला। यदि शून्य सहपद का योग से एह सबके वाक्य में व्यवहार कइल जाय त रूपिम का अलावे ओह हालत में ई रूप भी कहा सकेला।

हिन्दी चाहे अँगरेजी का प्रचलित व्याकरण में वाक्य के ई परिभाषा दिहल गइल बा कि शब्दन का मेल से वक्ता का भाव के श्रोता तक पहुँचावे में समर्थ शब्द-समूह के वाक्य कहल जाला। भाषाविज्ञान एकराके सही नइखे मानत। भाषाविज्ञान त ई मानत बा कि शब्द में जब प्रत्यय-परसर्ग के योग होला त ऊ रूप बनेला। एही रूपन से वाक्य के रचना होला। एकर साफ मतलब ई भइल कि शब्द में वाक्य बनावे के क्षमता ना होखे, वाक्य के रचना रूप से होला। ऊपरी तौर से ईहो बुझाता कि शब्द में कवनो योग ना भइल, आ वाक्य में ओकर प्रयोग कर देहल गइल। साँच त ई बा कि शब्द में जहाँ कवनो योग देखाई नइखे देत उहाँ भाषा-

विज्ञानी शून्य रूप का योग के परिकल्पना कर लेवेलन। एगो वाक्य का विश्लेषण से ई बात साफ होई—

किसान खेत के जोतऽता।

रूप आ रचना का खेयाल से एह वाक्य के भाषावैज्ञानिक विश्लेषण एह तरह से होई—

किसान (कर्त्ता + शून्य रूपिम)

खेत के (कर्म + कर्म कारक के परसर्ग)

जोतऽता (धातु + सर्वनामीय विस्तार का आधार पर कालवाची रूपिम)

रूपिम अउर रूप में फरक ई बाटे कि रूपिम यदि पूरा तौर पर अपना-आप में अर्थवान बा अउर वाक्य में प्रयुक्त बा त ओहके रूप कहल जाई, बाकिर वाक्य से अलग लिखल जाय अउर सबसे छोट इकाई रहे त रूपिम कहाई, रूप ना।

बद्ध रूपिम

बद्ध रूपिम विभक्ति चाहे प्रत्यय के रूप ह जे कवनो मुक्त से मिलिके ओकरा अर्थ के विकार में हेर-फेर ले आवेला। बद्ध रूपिम अपना-आप में पूर्ण ना होला, एहसे ई अपना-आप में अर्थवान भी ना होखे। ई बात त बद्ध नाँवें से झलकत बा। बद्ध रूप बन्हल अइसन होला जेकराके अर्थवान बनावे वास्ते कवनो मुक्त रूप के सहारा जरूरी बा। ई रूप के ऊ अंश ह जवन दोसरा का सहारे अर्थवान होला, काहे कि व्यावाहरिक रूप से ऊ कबो कवनो उच्चरित रूप के अपने-आप निर्माण ना कर सके। भोजपुरी भाषा में प्रत्यय-परसर्ग का उदाहरणन के कमी नइखे। दू-एगो उदाहरण दिहल जात बा—

देखल (देख् + अल)

लिखवइया (लिख् + वइया)

घरइतिन (घर + इतिन)

बुढ़उती (बूढ़ा + बुढ़ + अउती)

ऊपर के शब्दन का रूपरचना में देख्, लिख्, घर, अउर बूढ़ा त अपना-आप में अर्थवान बा बाकिर एकरा साथे अल, वइया, इतिन अउर अउती अइसन रूप बाड़न स जिन्हनीके अपना-आप में कवनो अर्थ ना होखे। हँ, जब ई कुल्हि बद्ध रूपिम देख्, लिख्, घर आउर बूढ़ा जइसन मुक्त रूपिम का साथे क्रमश: मिलिहन स तब इन्हनीके अर्थ एकदम साफ हो जाई आ इन्हनीके उपयोगिता भी सिद्ध होई। एह तरह से अल, वइया, इतिन अउर अउती वगैरह बद्ध रूपिम ह। एगो रूप में कईगो रूपिम के योग संभव बा। वितरण का आधार पर आ संख्या के ध्यान में राखिके रूप आ रचना का विचार से भाषा-विज्ञानी लोग रूप के दूगो भेद कइले बाड़न— (१) एकरूपिमिक, अउर (२) बहुरूपिक।

एकरूपिमिक रूप ऊ ह जवनामें एकेगो रूपिम रहेला। ई रूपिम मुक्त भी हो सकेला अउर बद्ध भी। दूनों

तरह के एकरूपिमिक रूप भोजपुरी में भरल वा। एकरा विश्लेषण खातिर कुछ उदाहरण दिहल जाता—

अपच, अतवार, उन्माद, कुकरम, घरनी, कठवता अउर पहिलौंठी।

ऊपर लिखल शब्द चूँकि एक से जादे रूपिम का योग से बनल बाड़न स एहसे इन्हनीके एकरूपिमिक ना कहल जाई। बाकिर इन्हनीका रूपरचना के भाषावैज्ञानिक पक्ष बतावल जाय, त इन्हनीके अलग-अलग रूप एह तरह से होई—

बद्ध एकरूपिमिक—अ/अत/उन/कु/नी/अवता/औंठी/

सुक्त एकरूपिमिक—पच, वार, माद, करम, घर, काठ, पहिल।

बहुरूपिमिक रूप ऊ ह जेहमें एक से बेसी रूपिम होखे। बहुरूपिमिक के मुख्य रूप से दूगो भेद बा—(क) मिश्र, आ (ख) यौगिक।

मिश्र रूपरचना में अइसन रूप आवेला जवनामें एगो चाहे एक से बेसी बद्ध रूप होखे बाकिर एक से बेसी मुक्त ना रहे। अँगरेजी के कुछ भाषाविज्ञानी लोग अइसन रूप के साधित गौण रूप कहेला। भोजपुरी में मिश्र रूप के उदाहरण भरल बा—

मिश्र बहुरूपिमिक—

मुक्त + बद्ध

बियहुती--(बियाह→ बियह + उती)

पढ़ाकू —(पढ़् + आकू)

देखल —(दिख् + अल)

सुनवइया — (सुन + वइया)

बद्ध + मुक्त

अकाज—(अ + काज)

वेकार—(वे + कार)

नामरद—(ना + मरद)

कमसल—(कम + असल → सल)

बद्ध + मुक्त + बद्ध

अनजानल — (अन + जान + अल)

बेबूझल — (बे + बूझ + अल)

अलगरजी—(अल + गरज + ई)

मुक्त + बद्ध + बद्ध

जंगलीपन—(जंगल + ई + पन)

बचपना —(बच्चा → बच + पन + आ)

मलिकार — (माल → मल + इक + आर)

बद्ध + मुक्त + बद्ध + बद्ध

सच्चितानन (सत् → स + चित + आ + नन्द → नन)]

मुक्त + बद्ध + बद्ध + बद्ध

सनकियावल — (सनक + इय + आव + अल)

धकियावल— धक्का + धक + इय + आव + अल)

यौगिक बहुरूपिमिक—

यौगिक रूपरचना का भीतर ऊ कुल्हि रूप आई जवनामें एगो से बेसी मुक्त रूपिम होला। भोजपुरी में ओकर उदाहरण एह तरह से बा—

मुक्त + मुक्त

फूलफल — (फूल + फल)

राजपूत—(राजा → राज + + पुत्र → पूत)

रनिवास—(रानी → रनि + आवास → वास)

दुर्गापुर — (दुर्गा + पुर)

मुक्त + मुक्त + बद्ध

जनमरवा —(जान → जन + मार → मर + वा)

मनमउजी — (मन + मौज → मउज + ई)

लतखउक — (लात → लत + खा → ख + उक)

मुक्त + बद्ध + मुक्त

घरेघर—(घर + ई → ए + घर)

रातोरात — (रात + ओ + रात)

सालोसाल — (साल + ओ + साल)

मुक्त + मुक्त + बद्ध + बद्ध

कमलेसरी— (कमल + ईश → एस + अर + ई)

परमेसरी—(परम + ईश → एस + अर + ई)

मिश्र अउर यौगिक बहुरूपिमिक रूपरचना का भीतर ऊ सब आवेला जवनामें कम-से-कम एगो मुक्त रूपिम जरूर होखे। जवना रूपरचना में एक से बेसी बद्ध रूपिम होखे, बाकी ओह में मुक्त रूपिम बिल्कुले ना होखे, ओकराके **साधित मूल शब्द** कहल जाला।

भोजपुरी बहुते शक्तिशाली भाषा ह जेकरामें भाव आ विचार प्रगट करेके जबर्दस्त क्षमता बा। ई एकर प्राकृतिक वरदान ह। भाषा का तरक्की खातिर आ ओकर शब्दशक्ति बढ़ावे खातिर समाज आ सरकारो का ओर से कोशिश कइल जाला, बाकी भोजपुरी के अइसन सरकारी कृपा ना मिल सकल। तबो एहमें अइसन-अइसन शब्द भरल बाड़न स जिन्हनीके ठीक-ठीक अनुवाद ना हिन्दिए में कइल जा सकेला आ ना अँगरेजिए में, हालाँकि कहल ई जाला कि अँगरेजी बहुत सम्पन्न अउर अन्तरराष्ट्रीय भाषा ह। एगो उदाहरण देखल जाय। छड़ी के अलगा-अलगा रूप खातिर भोजपुरी में कईगो शब्द प्रचलित बाड़न स— **छड़ी, छकुनी, लउर, लाठी, पटकन, पैना, डंटा, सोंटा, गोजी** वगैरह। ई कोश के शब्द ना हवन स, बेवहार में आवेवाला उपयोगी पदार्थन के नाँव हवन स। एह अर्थ में भोजपुरी भाग्य-शाली बा कि उन्हनीके अलग-अलग नाँव दे सकल। अँगरेजी में जब स्टिक (stick) से भाव ना निकल सकल त लेठल वेपन (lethal weapon) कहिके काम चला लिहल गइल, हालाँकि लेथल शब्दो हमनीके लाठी शब्द से ही बनल बा। हिन्दी में एह पदार्थन के ध्यान में राखिके इन्हनीके अलगा-अलगा नाँव राखे के कबो ना सोचल गइल आ ना भोजपुरी में प्रचलित एह नाँवन के हिन्दी-शब्द-कोश मे शामिले कइल गइल। ई तब के हाल बा जब भोजपुरी वनफूल नियन

विकसित होत आइल जेकराके सींचे खातिर ना त लोगन का मन में बेचैनी बा आ ना बेचैन भोजपुरी-सपूत का लगे ओकर साधन बा। अइसनो हालत में भोजपुरी भारते ना, भारत से बाहरो फीजी, मारिशस, गयाना, सूरिनाम आ ट्रिनिडाड वगैरह देशन में सशक्त भाषा का रूप में प्रचलित बा। एकरा क्षमता आ सामर्थ्य के एहसे बड़ प्रमाण दोसर का हो सकेला !

—रीडर, हिन्दी-विभाग
सच्चिदानन्द सिनहा कॉलेज,
औरंगाबाद



लघु कथा

प्रयोग

□ विवेकी राय

गाँव में एगो आधुनिक साहित्यकार के सम्मान भइल। लोग कहाँ से अइसना सभा में जुटित ! तमाम प्राइमरी-मिडिल के लरिका बोलाके भीड़ बइठा दिहल गइलि। ई डर रहे कि इन्हनीका समझ में कुछ ना आई त खड़बड़ करिहनि स। एकरा खातिर सोचि-बिचारिके एगो इन्तजाम भइल। हर दस-बारह लरिकन का बीचे-बीचे एकएगो समझदार अदिमी बइठावल गइलन। सभा के कारवाई शुरू भइलि। थोरे घरी का बाद गड़बड़ी शुरू भइलि। अब जइसहीं कवनो छोट लइका हँसे लागे, बोले-बतियावे लागे, उठिके जाये लागे भा कवनो के छिउँकी काटे, बस ओही घरी बीच में बइठल समझदार अदिमी नजर बचाके उपाय कइ दे। पीठि पर घूसा के धमाका होते चट शांति हो जाय। एह तरह सभा शांति से सम्पन्न हो गइलि। बाद में चाह पीयत खा साहित्यकार महोदय पुछलन कि सभा का बीच-बीच में धम्म-धम्म के शब्द कहाँ से आवत रहल हा ? लोग उनकराके बतावल कि जइसे आप साहित्य में नया प्रयोग कइले बानी ओइसहीं हमनका सभा-समारोह में अविरल ताली का जगह प विरल 'धामर-धुमर' के प्रयोग कइ रहल बानी जा।

—बड़ी बाग, गाजीपुर



मुट्ठी भर सपना

□ भगवतीप्रसाद द्विवेदी

रेक्सा ऊबड़-खाबड़ सड़क पर खड़-खड़ात आगे बढ़ल जात रहे। हवा पाछा से सरसरात रहे। स्वामीनाथ के कुछ सिहिरावन-अस बुझाइल आ ऊ अँगवछा के पगरी बान्हि लिहलन। आजु ऊ छोटू से मिले जात रहन। उन्हुकासे भेंट भइला बरिसन सरकि गइल। एह बीचे उन्हुकोमें ढेर बदलाव आ गइल रहे। कपार, मोंछि आ दाढ़ी के वार प, जवन पहिले खिचड़ी रहे, अब सोरहो आना सफेदी चढ़ि गइल रहे। मोतियाबीन का ओजह से अब सभ कुछ धूआँ-अस लउकत रहे—कोहासा-छवला भिनुसार लेखा। दाँत पाकल आम-अस टूटि-टूटिके गिरे लागल रहन स। सुरती ससुरी के निसे अइसन होला। उन्हुकर के कहो, अब त बड़कुओ के दाँत संग छोड़त जात रहन स।

स्वामीनाथ के आजु, ना जाने काहे, अपना परिवार के बिलबिलात जिनिगी मूस-अस मन के पन्नन के कतरति रहे। बेरि-बेरि ऊ अपना के बहके से रोकल चाहत रहन, बाकिर मन बे-लगाम के के घोड़ा- अस बिलमते ना रहे। अब का, आपन छोटू बेटा छू-मन्तर-अस सँउसे जवाल के छन भर में सझुरा दीहें। बेचारू के धन्धे कुछ अइसन बा कि ओकरासे मोहलत निकालल अपना हक में आ समाज का हक में नीमन ना कहाई। ओतहत बड़, चीफ मेडिकल अफसर के ओहदा, जिमेदारी के पहाड़, रोगिन के लमहर लएन। स्वामीनाथ के अपना छोटू-लेखा सपूत प बड़ा नाज भइल आ ऊ बायाँ हाँथ से मोंछि अइँठे लगलन।

बड़कू पढ़े में कवनो खास तेज ना रहलन। लाड़े-दुलार में बिगड़िके माटी हो गइलन। तबे नू हाई इस्कूल पास कके कसहूँ सोर्स-पैरवी का बूता प बी० टी० सी० में नाँव लिखवलन आ टरेनिंग पास कइला का बाद, गाँवें का प्राइमरी इस्कूल में मास्टरी करे लगलन। भला मास्टरिओ कवनो नोकरी ह? ऊहो छोट किलास में? दिन भर लरिकन के चरवाही करऽ, आ सांझ का बेरा घरे अइला प भर पेट भोजनो पर आफत। धत् तोरी के! स्वामीनाथ के खाँसी उपटलि आ ऊ खाँसिके पच्च-से बगल में थूकि दिहलन।

उन्हुका आँखि का सोझा छोटू के सूरत नाचे लागलि। बड़ा होनहार निकलल रहे ऊ। जइसहीं एक बरिस के भइल कि ओकर माई दुनियाँ छोड़ि के चलि गइली। स्वामीनाथ

के दोसरका बियाह खातिर एक-से-बढ़िके-एक रिस्ता आवे लगलन स। बाकिर ऊ ई नीमन तरे जानत रहन कि दूनों लरिकन के दोसरकी महतारी उन्हनीके भागि आ भविष्य के काँचे चबा जाई। एहसे चाहे उन्हुका लरिकन का 'केरियर' प धेयान देवे के परी चाहे अपना जिनिगी का सुख प। बहुत दिन ले ऊ पगलइला-अस दुबिधा का अथाह समुन्दर में डूबत-उतरात रहन। ओने हितो-नात लोग जइसे बियाह करावे खातिर किरिया खा लेले रहे। रोज केहू-ना-केहू के लेके पहुँचले रहे आ ऊ जइसे-तइसे ओह लोगन से पिंड छोड़ाके भागसु। आखिरकार बेटन के 'केरियर' उन्हुका जादे जरूरी बुझाइल आ अपना सउँसे सुख-सुविधा प लात मारिके ऊ दोसर बियाह रचावे से साफ इनकार क गइलन।

रेक्सा के कुदला-फनला से स्वामीनाथ के सन्तुलन बिगड़ि गइल आ ऊ एक ओर निहुरिके लुढ़ुकत-लुढ़ुकत कसहूँ बचलन। बुझला सड़क प कवनो गड़हा परि गइल रहे। कइसन टूटल-फूटल, ऊबड़-खाबड़ बा इहवाँ के सड़क। ऊ मुँह बिजुका दिहलन।

"बाबू, बोरिंग रोड चले के बा नू, बड़का डागडर बाबू किहाँ?"—रेक्सा-वाला मुँह फेरिके सवाल ठोकलस।

"हँ हँ, कह त देले रहीं—ईस्ट बोरिंग रोड।" स्वामीनाथ अनमनाहे भाव से कहलन।

एने मन खरहा-अस भागत रहे—रेक्सो से तेज, बहुते तेज।

उन्हुका मन परल, एक दिन हेड-मास्टर चकरवर्ती उन्हुकाके बोलवले रहन। जइसहीं ऊ उन्हुका आफिस में ढुकलन, चकरवर्ती साहेब छोटू का बड़ाई के लमहर पुल बान्हे लगलन। आखिर में ऊ ईहो जोड़ले रहन—'बाढ़े पूत पिता का धरमे, खेती उपजे अपना करमे'। आ स्वामीनाथ ओहू दिने मोंछि प ताव देले रहन।

"स्वामीनाथ जी! हम रउरा घरऊ हालत से नीके तरी वाकिफ बानी', चकरवर्ती बातन के एगो लमहर सिलसिला खतम कइला का बाद कहले रहन, "रउरा लगे कुल्हि आठ-सात बिगहा खेत बा। काहे ना ओही में से पाँच बिगहा छोटू के पढ़ाई का जग्य में हवन दे दीं। जब लरिका पढ़-लिख जाई त पाँच का जगहा पचास बिगहा कीनत ओकरा देरी लागी का?" आहेडमास्टर साहेब स्वामीनाथ का सूरत प ठीक ओही तरे आँखि गड़ा देले रहन जइसे कवनो जोतिसी भागिफल बतवला का बाद गहँकी का ओरी ताकेला।

स्वामीनाथ का चकरवर्ती के बात बड़ा नीक लागलि आ ऊ ऊहे कइबो कइलन। अब जमा-पूँजी दू बिगहा बंजर जमीन बाँचि गइल रहे। फेनु त परिवार का रोटी बदे करजा लेवे के सिलसिला सुरू हो गइल रहे।

आजु ऊ जमीन छोड़ावे के, कुछ अउर उपजाऊ जमीन लेवे के, आ एगो ट्यूब-वेल लगवावे के बात छोटू से जरूर कहिहन। लाखन रोपेया महीना कमात जे बाड़न छोटू !

हचकत रेक्सा ठाढ़ हो गइल।

"सक्सेना साहेब के मकान ईहे ह, बाबूजी" —रेक्सावाला अँगवछी से मुँह पोंछे लागल।

डॉ० सी० एल० सक्सेना, मुख्य चिकित्साधिकारी, के बोर्ड पढ़िके स्वामीनाथ इतमीनान से उतरलन।

"कइसन शानदार कोठी बा !"— ऊ मने-मने बुदबुदइलन।

गेट प लटकल तख्ती स्वामीनाथ पढ़े लगलन—'कुत्ते से सावधान।'

"बबुआ, छोटू !"—ऊ बहरे से बोलवलन।

कवनो जवाब ना मिलला प दोहरवलन—अबकी पारी तनी जोर से। एगो मेहरारू उन्हुकाके देखिके भितरा ढुकलि आ तनी ऊँचे आवाज में बड़बड़ाइलि, "के ह हो....देखऽ त, बदतमीज कालबेल ना दबाके कुकुर अस भूँकऽता.... ।"

स्वामीनाथ के अपना गलती प पछतावा भइल। बगले में घंटी के के बटन रहे। उन्हुका अपने प खीस बरल कि जिनिगी-भर कइसना अटट देहात में रहलन जे घंटिओ बजावे के अकिल ना आइल। धत् तोरी के !

एगो लरिका उन्हुकासे परिचय पूछि-जाँचिके भीतर गइल। फेनु ऊहे मेहरारू आइल—"आईं।"

ऊहे बहू रहली—छोटू के मेहरारू। ओइसे कबहीं देखले त रहन ना, बाकिर अन्दाजे प ऊ समुझ गइलन आ एही ओजह से पूरा देखिओ ना पवलन। ऊ आगे-आगे बढ़ली आ स्वामीनाथ पाछा चलत गइलन।

उन्हुका इयादि आइल, ऊ छोटू का एह बियाह के बिरोध कइले रहन, बाकिर छोटुओ चिट्ठी भेजलम त बियाह क लिहला का बाद। फेनु बिरोधो कइला से भला का होखे-जाये के रहे। गाँव के चनरिका दादा उन्हुकाके समुझवलन-बुझवलन, "अरे छोड़ऽ, बबुआ। लरिका पढ़ लिखि गइल। आपन नीमन-बाउर ऊ खुदे बूझत बा, तोहरा का। आ लरिकिओ त पढ़ल-लिखल बिआ। कालेज में फरफेसर बिआ। अब चहवे का करीं ? आम के आम आ अँठिली के दाम !" ऊहो चुप्पी साधि लिहलन, नाहीं त ओही घरी इहवाँ आवेवाला रहन।

"छोटू नइखन का, बहू ?"— सोफा प बइठला का बाद सायं-सायँ करत सन्नाटा के तुरलन।

"जी ना, रोगी देखे गइल बाड़न। सीरियस केस रहे। अब आवते होइहें।" —कहिके बहू भीतर चलि गइली।

स्वामीनाथ का बे-जूता-चप्पल के अपना लँगटा गोड़ के एहसास

भइल। बहू उन्हुका धूरि-धाकर से सनल बेवाइ-फाटल गोड़ के देखत रहली हा। तबहीं उन्हुकरा कुछ खियाल परल आ ऊ कपार प बान्हल पगरी खोलिके अँगवछी के कान्ह प धइ लिहलन।

घर के सजावट देखिके स्वामीनाथ के आपन माटी के ढहल-ढिमिलात घर आँखि का सोझा नाचे लागल। एह साल छोटू से कहिके एगो नीमन मकान बनवावे के होई। अपनो त कुछ मान-मरजादा बा! भला एह तरी कब ले चली!

नोकर चाह देके चलि गइल। स्वामीनाथ कप-पलेट उठाके चाह के चुसुकी लेवे लगलन।

एगो लरिका धउरल आइल आ पलक झपकते भीतर चलि गइल —"के ह, मम्मी?"

"तोहार दादा।"

"छी, आपन दादा त ऊ जज साहेब हवन नू। हमनी खातिर पापिन्स, चाकलेट, आइसक्रीम ले आवेलन। ई त मइल-कुचइल धोती-कुरता.... लँगटे गोड़····कुछ लेइओ ना अइलन" —ओतना छोट लरिका के बात सुनिके स्वामीनाथ के मुँह अचरज से खुलि गइल। अपना अलचारी प उन्हुकरा हँसी बरे लागल।

अचके में हारन बाजल। स्वामीनाथ आँखि मिचमिचाके देखे लगलन। छोटू आवत रहन। फूल-अस खिलिके ऊ बेटा का ओरि बढ़लन।

"बाबूजी, रउरा....?"—छोटू उनुकर ठेहुना छू लिहलन।

"जुग-जुग जीअऽ बबुआ!"—स्वामीनाथ गदगद होके बोललन।

"का हाल-चाल बा, बाबूजी?" कोट उतारत छोटू पुछलन।

"सभ ठीके बा, बेटा। बस एक-एक दिन कसहूँ कटि रहल बा। तोहनिए लोग के त भरोसा बा।" —बेटा के सनेह में स्वामीनाथ के आँखि भरि आइलि।

कालबेल बाजल आ छोटू ओनिएँ लपकलन। स्वामीनाथ थोरिका देरी ले बहरी झाँकत रहन, फेनु घर में टाँगल तसबीरन में भुला गइलन।

सबेरे स्वामीनाथ चाह पीके उठलन आ हाता में आके टहरे लगलन। बगल में दूनों पोता, बबलू आ डबलू, चलत रहन स। ऊ परेम से दूनों पोतन के माथा चूमि लिहलन, बाकिर ऊ दूनों त मुसुकइला का जगहा नाक-मुँह फुलाके एक ओरी ठाढ़ हो गइलन स। स्वामीनाथ के कठेया मारि दिहलस। कतना फरक होला सहर आ देहात का लरिकन में! अब ले बड़कू के बेटा त कोरो आवे के जिद ठानि लिहितन स।

"बाबूजी!"—छोटू इतमीनान से बइठिके उन्हुकराके बोलवलन।

"अबहीं अइलीं, बेटा।"—ऊ ड्राइंगरूम में हड़बड़ाके ढुकलन।

"कहीं, गाँव से अचक्के में आवे के कइसे तकलीफ कइलीं ? कवनो खास बात ?" बेटा का ओठ प मुसुकी नाचति रहे।

"का कहीं, बेटा !" स्वामीनाथ खँखारिके कहल सुरू कइलन, "बड़कू हमराके तोहरा लगे भेजले बाड़न। उन्हुकर बेटी सेयान हो गइल बिआ। तेइसवाँ साल पार क चुकल बिआ। तिलक-दहेज बिना लरिका कहवाँ मिलऽता आजकाल्ह ? चीफ मेडिकल अफसर के भतीजी ठहरलि ! ओने घरो-दुआर त एह साल का बाढि में ढहि गइल। महाजन के करज सुरसा लेखा बढ़ले जा रहल बा। तोहरे पढ़ाई में लेवे के परल रहे। खेत सभ बिकाइए गइल बा। थोरिका-थोरिका कके ले लिहितऽ त....तोहरे पढ़ाई में वेचे के परल रहे।"

स्वामीनाथ बात आगे बढ़ावहीं-वाला रहन कि बहू बीच में आ गइली, "एगो बाप का नाते त रउरो ई फर्ज रहे कि इन्हिकरा के पढ़ाई-लिखाई। अगर सामरथे ना रहे त सूअर-कूकुर अस बेटा जनमवला के का जरूरत रहे ?"

बहू का बात के बान लागते स्वामीनाथ का मुँह प चुप्पी के ताला लागि गइल।

"पहिले सुनऽ त सही"—छोटू बात काटिके उन्हुकरा ओरी इसारा कइलन, "फेनु, बाबूजी ?"

"छोटू !" स्वामीनाथ के हलक से मुअल आवाज आइल, "तोहरा भतीजी के बियाह बहुत जरूरी बा। बड़कू का लगे कुछऊ नइखे। ओने महाजनो आखिरी चेतावनी दे देले बा। पनरह दिन का भीतर रुपया ना दिआई त घर-दुआर लिलाम करा दी। तब हमनीका कहवाँ जाइब !"

स्वामीनाथ का आँखि से लोर के मोती जइसहीं गाल प ढरके लागे, ऊ दोसरा ओरी मुँह फेरिके अँगवछी से पोंछि लेसु।

"त सभकर ठीका ईहे लेले बाड़न का ?"—बहू फेनु टपकली, "घर-दुआर में इन्हिकरो त हिस्सा-वखरा होला। कवन रउरा सभसे माँगे जात बाड़न....आ जे बेटी जनमवले बा ऊ समुझो। हमनीके का करीं स ?"

अइसन बात उन्हुकरासे त आजु ले केहू ना कहले रहे। स्वामीनाथ चकरा गइलन। ऊ मने-मने बड़की आ छोटकी बहू के मिलान करे लगलन। बड़की बहू त आहट पावते घूघ काढ़ि लेली। बोलल-चालल त दूर रहे ! कतना खेयाल राखेली ऊ। अगर जाने-अनजाने बड़कू खीसि में कुछ कहिओ देलन त बहू उनकेके डाँटे-डपटे लागेली।

"तूँ चुप रहऽ"—छोटू बहू के बात काटिके कहलन, "बाबूजी, दर-असल बात ई बा कि एही साल साढ़े

चार लाख रुपया लगाके हम ई बिल्डिग बनवलीं हाँ। अब हमरा लगे कुछऊ नइखे। बड़ा मोसकिल से परिवार के रोटी-नून के जोगाड़ बइठा पावत बानी। नाहीं त हम रउरा सभ के मदत करे में उठा ना रखितीं।"

स्वामीनाथ के ओठ सिया गइल। का कहसु, का ना कहसु। ढेर देरी का बाद ठाढ़ होके ऊ कहलन, "चलत बानी, बबुआ।"

अँगवछी से आँखि पोंछत स्वामीनाथ बहरी निकलि अइलन। गाँव से सजा-सँवारिके ऊ जवन मुट्ठी भर सपना ले आइल रहन ऊ सभ एकाएक सोनचिरइयाँ-अस फुर्र-से उड़ि गइलन स, आ अब स्वामीनाथ खाली हाँथे वापस लवटत रहन।

"अतना जल्दी ? अबहीं काल्हुए त रउरा अइलीं। गाँव-घर का बारे में अबहीं त कुछऊ बातचीत ना भइल, आ आजुए....?" छोटू का बात में अचरज के पुट रहे।

"ना बेटा ! सभ कुछ हो गइल–सभ कुछ। बहू ठीके कहली हा, दोस सन्तान के ना होला। सभ दोस जनमावेवाला के होला। खुस रहऽ बबुआ, हमेसा खुस रहऽ....।"

—कार्यालय जिला-प्रबन्धक,
टेलीफोन-निर्देशिका-अनुभाग, पटना



पाँड़े जी के दैनिकी

□ रामदेव त्रिपाठी

संपादकजी,

परसों हमार पड़ोसी कूँचा पाँड़े हमराके एगो पुलिन्दा दे के कहले कि हई रउआ अपने जिम्मे राखीं। ई बाबूजी (रामरूप पाँड़े) के दू-चार गो फाटल-पुरान कर्मकांड के पोथी ह, ई हमरा खातिर वेकार बा। रउरा पुस्तकालय-संग्रहालय में कतहूँ काम आ जाई। हम ऊ ले लिहलीं। ओहीमें एगो पुरान दैनिकी के पन्ना मिल गइल। पढ़लीं त एक छन सुन्न रह गइलीं। ई हम रउए किहाँ भेजऽतानी, ठीक बूझब त प्रकाशित कर देब।

राउर
रामदेव त्रिपाठी

होत प्रात वज्रपात ! रात का बाद केहूके प्रभात कवनो सौगात से आरम्भ होला, केहूके प्रभात श्रीमतीजी का लुत्ती लेखा लागेवाला दुलत्ती बात से आ केहूके प्रभात समहरे दुलात से, केहूके प्रभात गरम गरम जिलेबी से, केंहू के अरुअइला भात से! आपन-आपन बिसात आ औकात ! वज्रपातो कवनो धारासंपात भा झंझावात का सूत्रपात से ना, एकदम अनभ्र वज्रपात। ऊहो, गात भा माथ पर ना, सोझे मन पर मर्मन्तुद आघात, आशा पर तुषारपात, आन्तरिक विश्वासघात ! ठीके बात ह। केहूके आराध्य देवप्रतिमा सुवर्णमय होला, केहूके मृण्मय। मगर धन्न ह अदिमी के जात आ धात। ऊ दइब के लात खात रहेला आ अउँघात रहेला, मुसकात आ अगरात रहेला !

विष्णुशर्मा कहले बाड़े —

उत्थायोत्थाय बोद्धव्यं महद्भय-मुपस्थितं। मरणव्याधिशोकानां किमद्य निपतिष्यति ॥

अर्थात्—रोज-रोज उठके बूझे के चाहीं जे आज कवनो लमहर विपत आ रहल बा; ना जाने आज मरन होता कि कवनो बेआध धरऽता, कि कवनो सोग !

मगर उनका असली खतरा त लउकबे ना कइल। एह तीनों के कान काटेवाला किस्मत के करामात ! पानी उतरल, बेइजती, मुँह पर कारिख पोताइल, पगरी उतरल, धन टूटल, माथा झुक गइल। अदिमी के देह त

चोर-चाई के, तिसरका दर्जा का असामी के जेहलखने नू ह ! ओकर पराती कवनो बेंत से पिटात कैदी के केकियाइले नू हाई कि सामगान ! शर्माजी आगा चलके समाधानो कइले बाड़े कि **शोकस्थानसहस्राणि भयस्थान शतानि च, दिवसेदिवसे मूढ़माविशन्ति न पण्डितम्** । अर्थात्— मूढ़ लोग का हर दिन सोग-पीड़ा के हजार गो आ भय-चिंता के सय गो जगह आवेला, पंडित लोग का ना ।

मगर पंडित लोग भये-सोग के नू सह लेला, बेइजतिओ के का ऊ लोग एही लेखा अँगेज लेला ! हो सकऽता । गीता में स्थितप्रज्ञ का परिभाषा में बतावल बा कि ऊ सुखे-दुख आ सिद्धि-असिद्धि में ना, मानो अपमान में ठूँठ लेखा, अविचलित रह जाला, तुल्यनिन्दा-स्तुति होला, चाहे रउआ ओकराके हाथी पर सोना-हीरा का हउदा में बइठाईं भा गदहा का पीठ पर, चाहे रउआ नौलखा पेन्हाईं भा जूतन के माला, ऊ तनिको ना सुगबुगाय । तुलसीदास कहऽताड़न कि रामजी दसरथ जी से सिंहासन पाके ना इतरइले, ना केकयी से नगर-निष्कासन आ वन-वास पाके छितरइले, उनकर मुख-कमल पत्थर का फूल नियन सम्पत आ बिपत, प्रभात आ रात, वसन्त आ शिशिर, घाम आ बरफ में एके लेखा रह गइल । मगर स्थितप्रज्ञ लोग के महिमे कुछ अउर बा । ऊ लोग त सउँसे संसार के घात कइओके ना बध का दोष से लिप्त होखे ना कवनो बन्धन में पड़े । कहल बा—**हत्वापि स इमान् लोकान् न हन्ति न निबध्यते। समरथ के नहिं दोस गुसाईं** । अइसन महातम मंत्रिए लोगन प घट सकेला, घटेला । शासन में बनल रहे खातिर ई गुन धारन कइल जरूरी बा । विष्णुओ छाती पर भृगुजी के लात खाके ना उनमुनइले ना तमतमइले, मुसकाते रह गइले । हमनी से अतना ना सहाय । **मणिरेव महाशाणघर्षणं न तु मृत्कणः** । बड सान पर के घिसाई हीरा नू झेलेला, माटी के कन, ढेला ना ।

बाकी कवनो उपायो त नइखे । हानि लाभ **जीवन-मरन जस-अपजस** बिधि हाथ । गोसाईंजी एहमे मान-अपमान के गनावल भुला गइले । कबीरदास लेखा उनकर कबो बिकट अपमान भइले ना होई, अपना पर बीतो तब नू याद पड़ो !

कलंकिओ लोगन में भागमान आ अभागा होलन । भरतजी का कलंक लागल कि उनके कारन राम बनवास गइलन, मगर उनकर कलंक बाद में उनका चीरजटाधारी बनके, अयोध्या तेजके नन्दिग्राम में तपोमय जीवन बितवला से धोआ गइल । रामजी इहाँ तक कह दिहले कि **जो न जनम जग होत भरत को, सकल धरम-धुर धरनि धरत को** । सभे जान गइल कि एहमें उनकर दोस ना रहे

बाकी केकई के कलंक! कृष्णो के कलंक लागल कि ऊहे सत्राजित के मारके ओकर मणि (कोहेनूर हीरा) छीन लेले। मगर ई धोआ गइल, काहे कि कृष्ण जी भालू (जाम्बवान) के आह्वान कके, युद्ध में पराजित कके फेरु ऊ मणि लेआके सत्राजित का परिवार के देके प्रमाणित क देले कि ई बाते झूठ रहे। मगर द्रौपदी जे भरल सभा में लँगटियावल आ झोंटा धके घिसियावल गइली ओकर दाग भीम द्वारा दुर्योधन का उरुभंग आ दु:शासन का बाहुभंग से, आ ओह दूनों का रक्त से उनका जूड़ा का बन्हइला से धोआ-पोंछा गइल? ओकर टीस ओरा गइल? ना। ई त आलर्क विषमिव पुन:प्रदीप्तम्। ई पगलाइल कुत्ता का कटला के विख ह, जब बरखा बरिसी तब जोर मारी, ई ना मेटाई, ई प्रान का साथे जाई।

मनुओ भगवान धर्म का लक्षण में पहिला स्थान धृतिए के दिहले बाड़े। साँचो, धीरज बड़ा भारी चीज ह। ई सब देसन में, सब धर्मन में, सब पन्थन में सर्व-सम्मति से सराहल बा। **धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपतकाल परखिये चारी।** एह आपत्काल में साथ देवेवालन में पहिला धीरजे ह। बलुक धर्म आ धृति पर्यायि ह। दसरथ धीरज ना रखले, राम का वियोग में मू गइले। आ कोसिला, सुमित्रा धीरज रखली त ऊ लोग चउदह बरिस का बाद फेरु राम-लछुमन के देखली, पवली, ओह लोगन के राज-सुख भोगली। ठीक बात ह—एति जीवन्त-मानन्दो नरं वर्षशतादपि। जीवन् नरो भद्रशतानि पश्येत। बाकी एगो बात। देखे में त बुझात बा कि दसरथ मरद होके काहे अतना अधीर हो गइले आ कोसिला मेहरारू होके कइसे छाती अतना कड़ा क लिहली! मगर एहमें एगो रहस्य बा। दसरथ का एह बात के पछतावा रहे कि उनके कारन रामजी का वन भइल। लोग कही कि बुढ़ऊ नया मेहरी का अइसन बस में भइलन कि उनकाके खुस करे खातिर जेठ बेटा के बनवास दे दिहलन। विरह-दुख का सँगे एह बेइजतिओ के उनका दंशन रहे। दइब के नचावल त नट-मर्कट का लेखा सभे नाचते बा, मगर मेहरारू का हाँथ के कठपुतरी भइल! छी-छी! सँगे-सँगे ईहो पछतावा रहे कि ई आघात, पाद-प्रहार, मेहरारू से, ओह मेहरारू से बरिसल, जवनाके ऊ कोसिला अइसन पतिवरता महिषी के उपेक्षा कके मनले, गुदनले! जेकरामें उनकर प्रान बसे! हाय! ऊ मेहरारू के अतना बिसवासे काहे कइले! **का नहिं अबला करि सकै! विश्वासो नैव कर्त्तव्य: स्त्रीषु राजकुलेषु च।** औरत जात आ मन्त्री के विश्वास कबो ना करेके। एह लेखा राम अइसन प्राणप्रिय, पितृभक्त पुत्र के वियोग का सँगे कोढ़ में खाज लेखा लोक में अपना स्त्रैणता के निन्दा आ ककयी का

प्रति अतना विश्वास का बदला में मिलल धोखा के पछतावा—तीनों के चोट मर्मन्तुद हो गइल। कोसिला का एगो पहिलके, पुत्र-वियोग के नू दुख रहे!

असल में स्वजन से मिलल विश्वासघात, छल-कपट, असत्य, चौर्य ना सहाय। भार्या पुत्रः स्वका तनूः। दसरथ का ई सब भार्या से मिलल। एह भरठजुग में त बहुत अदिमी सूत-उठके मेहरारू द्वारा वाग्बाण से जर्जर कइल जाता, आ बूढ़ भइला पर त अपना बेटो से। भर्तृहरि त अतने कहके रह गइले—यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता; धिक् तां च····मां च, मगर शंकराचार्य त साफ घोषित क दिहले—का ते कान्ता कस्ते पुत्रः। के मेहर आ के बेटा! अर्जुन के चन्द्रलोकगत अभिमन्यु केह लेखा लुलुआ दिहले! यावद्वित्तोपार्जनसक्तः तावत् निज परिवारो रक्तः। जबले रुपया कमात रहबऽ तबेले तोहके परिवार पूछी। मगर हमरा त बुझाता कि ना, ईहो बात नइखे। कमइलो पर ना पूछे। ग्वाला लोग के जीविका त गाये-भइँस से नू चलेला। बाकी ऊ लोग बदला में गाय-भइँस के कतना सुख देता, का खियावऽता, का ओढ़ावऽता, कहाँ बइठावऽता। ताँगावाला लोगन के रोजी-रोटी उन्हनीके घोड़वे नू देलन स मगर घोड़वन के ऊ कोचवान लोग का खियावेला, कतना खियावेला, कहाँ बान्हेला! आ गदहवन के धोबीलोग का खियावेला-पियावेला, कहाँ बइठावेला-सुतावेला। सोझ बात बा। हर अदिमी हर दोसरा के बलदोहन करे के चाहऽता, अधिका से अधिका बलदोहन। हर सबल हर अबल के शोषण करऽता। मेहरारू अपना मरद के आ बेटा-बेटी अपना बाप-मतारी के शोषण करऽता। मगर भगवान का माया के ई खेल बा कि हर बाप-मतारी बेटा-बेटी से शोषित होता, कुछ दूर आ हद तक त मोह से, अनुमति से, स्वेच्छा से, आनन्द से, बाद में जबर्दस्तिओ, लोकलाज से, निरुपायता से। ऋषि लोग एह मार्मिक पीड़ा से पनाह खातिर बानप्रस्थ आ संन्यास आश्रम बनवलन, वाकी कहाँ केहू निकलऽता घर छोड़के। ई माया कारी कमरी ह। एह पर ज्ञान-बिराग के रंग जल्दी ना चढ़े। कमरी के त अदिमी छोड़ देव मगर कमरिआ जे अदिमी के नइखे छोड़त—बना घोंसला पिंजरा पंछी।

सास्तर कहऽता—सर्वतो जयमन्विच्छेत् पुत्रात् शिष्यात् पराजयम। एकर माने लोग गलत लगावेला। एकर माने ई ना ह कि पिता आ गुरु चाहेले कि बेटा आ चेला हमरासे आगा निकल जाव, हमरासे अधिका यशस्वी होखो, काहे कि पुत्र का जस से बापो के आ चेला का जस से गुरुओ के जस होला, जइसे राम का जस से दसरथो के आ कृष्ण का जस से वसुदेव आ नन्दो के जस भइल, शिवाजी का जस से समर्थ गुरु रामदासो के, दयानन्द का जस से बिरजानन्दो के, आ विवेकानन्द का जस से रामकृष्ण परमहंसो के जस भइल। ऊहूँ। ई त स्वार्थे भइल। ई केकरा ना रुची कि हमार बेटा भा चेला हमरा के सूद का

साथे जस लवटा देव ! तब एकरा खातिर विधिलिङ् लकार का विधान के, प्रेरणा के, विधि के, कानून बनवला के कवन जरूरत रहे ? एकर माने ह कि सबका अपना संतान आ चेला का आगा हार माने के उमेद राखे के चाहीं। अदिमी बहरा से भले जीतके आ जाव, मगर ऊ घरे में मार खा जाला, मात हो जाला, हार मान जाला। बलुक एह श्लोकार्ध में कुछ अधूरापन रह गइल बा। मुनिजी भुला गइलन। एकरा होखे के चाही—**बहिः शंसेद् जयं पत्न्याः तोकात् शिष्यात् पराभवम्।** माने, जस आ जीत के आसा बाहरे राखे के चाहीं, घरे त जोरू से आ जामल से आ चेलन से अनादरे के उमेद करे के चाहीं। पहिले बेटे-बेटी-पतोह बूढ़ बाप-मतारी आ सास के लतियावत रहल हा, अब चेलो कुलपति आ प्राचार्य लोगन के सात पुस्त के तारऽता, दू-चार चमेटा घीच देता। ठीके ह—**घर के जोगी जोगड़ा।** डाक्टरो के डाक्टरी अपना घर में ना चले। अतने भर ना। इहाँ **पराजयम्** ना, **पराभवम्** पाठ चाहीं। हार ना, तिरस्कार, बेइजती। आ **इच्छेत्** ना, **शंसेत्** होखे के चाहीं। सबसे जीत, कीर्त्ति, कृतज्ञता के उमेद करे के चाहीं, मगर बेटा-बेटी-मेहरारू आ चेला से मात के, लात के, घात के, वज्रपात के।

धन्न कठजीव ह अदिमी। काल्ह बुझात रहे कि हृदय-गति रुद्ध हो जाई, राती खानी सुतले रह जाइब। दुनियाँ के रस केहू सोख लेलस, ई ऊसठ हो गइल, निचुड़ गइल, अरुआ गइल, एहमें तनिको रस नइखे बाँचल जे खा-पीके जीयल जा सके। धरती बड़ा तेज घूमऽतिआ। हमरा घुमरी लाग गइल बा, अब गिरब, तब गिरब; आँख का आगा अन्हार हो रहल बा, जीव के दियरी भुकभुका रहल बा, अब बुताइले चाहऽता। मगर देखऽतानी कि पूरा साबूत बाँच गइलीं, मुअलीं ना। आ कि ई हमार भूत ह, हम ना हईं ! हम साँचो ऊ मर्मन्तुद आघात, बेइजती, विश्वासघात, पीठ पर के प्रहार, प्रवंचना सहिओ के सही-सलामत रह गइलीं ? बाह रे हम ! धन बानी हम ! त सब लोग हमार जयजयकार काहे नइखे करत। हम त नेतो लोग के, मन्त्रिओ लोग के, विष्णुओ का धिरिजा के कान कटलीं। तुलसी कहऽताड़े—**सुत बनितादि जानि स्वारथरत न कर नेह इनही ते, अंतहि तोहि तजेंगे पामर तू न तजै अबहीं ते।** बाप मतारी त मुअलो पर बेटा का दुआर के बैल होके नीमन से खेत जोते के, गाय होके पोता के सुद्ध दूध पियावे के, कुत्ता-कुत्ती होके चोर से बेटा-पतोह के बचावे के चाहऽता। केंकड़ा के बच्चा मतारी के पेट फारिए के बहरी निकलेला, त एहसे

का कैंकड़िया गर्भ ना धारण करे ? ज्यों जुवती अनुभवति प्रसव अति दारुन दुख उपजै; ह्वै अनुकूल बिसारि सूल सठ पुनि निज पतिहि भजै। लोलुप भ्रम गृहपसु ज्यों जहँ-तहँ सिर पर आन बजै; तदपि अधम बिचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ लजै। पतित मनवाँ ई त मानत नाहीं। परुष बचन अति दुसह स्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो। ई त हो जाई। विगतमान ? ईहो सधा जाई। मगर विगत-अपमान, विगत-तिरस्कार, विगत-निन्दा, विगत-अपजस ? बाप रे ! ई ना सधाई। अइसन अदिमी त स योगी अथवा पशुः। जोगी हमनी होइए ना सकीं, आ पशुओ बन गइल ठट्ठा नइखे। बाकी राह कवन बा ? जस अपजस बिधि हाथ। ईहो त बिधना अपने हाँथ में ले लेले बाड़े। अदिमी का अखतियार में रहहीं कहाँ देले बाड़े। बीच बाजार में जेकर चाहस, पानी उतार लेस। रमइया के दुलहिन लूटल बजार। जइसन रमइया के दुलहिन, तइसन रमइया। ऊ का दोसर हवन !

तब एह पीठ पर बेटा-बेटी-जोरू के लात-जूता खात, बदजात, गाय-भइँस लेखा दुहात, टट्टू-बैल लेखा जोतात, गदहा लेखा लदात, कुत्ता लेखा कँड़ात, आ सूअर लेखा मइला खात आ मइला में लेटात, मगर कहात अशर्फुल-मखलूकात। तदपि न मूढ़ लजात।

—सेवानिवृत्त प्राचार्य

नेतरहाट आवासीय जनता महाविद्यालय

सम्प्रति—भाषाविद्

बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना



बरवै

□ अविनाशचन्द्र विद्यार्थी

लहरल धह-धह सउँसे दुनियाँ जात।
ठहरल तनिका सभके जहर जनात ।।

मुरुगा बा उरुआ में आज गिनात।
लहठी बा सोना का मोल किनात ।।

केहू ना केहूके दुख पतियात।
अपने आगी-काठी जरे जमात ।।

बिसरल मंतर गारी घोंखल जात।
चन्दन बा भनसारी झोंकल जात ।।

मुसुकी इहाँ महँग बा, हँसी अमोल।
भेंटत मँगनी में बा करकस बोल ।।

कुइयाँ माँह दुआरी जहाँ खनात।
जोमे आन्हर गिरिहें अब भहरात ।।

आँखि मूँदके डोलत चलत उतान।
बा लोगन का मुँह में हलुक जबान ।।

भूँकि रहल जे चढ़िके अपना घूर।
लागल धूरि उड़ावे, सबखे चूर ।।

अब अपना में केहू कहाँ समात।
लीले खातिर अनका के हहुआत ।।

बाँटत बंडा बनरा बा उपदेस।
पोंछि कटाके पवलीं नर के भेस ।।

एक रहेले अलगे-अलगे सून।
दस ना बनले रहिके गोरस-नून ।।

सँउसे देहे मलले चलसु भभूत।
कातसु अनका चरखे ऊहो सूत ।।

इहाँ रखाइल सज से बा अलगाव।
भोर परल बा सभके अब अपनाव ।।

बिना लगवले दम ना होला ध्यान।
बिना चढ़वले 'रम' ना होला ज्ञान ।।

अपना मनहीं सभे भइल सरदार।
केहूका केहूसे का दरकार ।।

धुँआ उड़वले ऊहे धावल जात।
आन्हीं का पहिले बा जे उधियात ।।

—शिवाजी पथ, यारपुर, पटना – १

मदनोत्सव होली

□ अक्षयवर दीक्षित

हिन्दी के विद्वान डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल राष्ट्र के स्वरूप में भूमि आ जन का साथे संस्कृतिओ के बराबरे दर्जा देले बाड़न। एह संस्कृति के सबसे अधिका जोगाके राखे में परब-तेवहार के विशेष महत्त्व बा। आ एह तेवहारन के रक्षा करेला साहित्य। भारतीय संस्कृति विश्व का संस्कृतियन में सबसे पुरान ह। एहसे स्वाभाविक बा कि संस्कृत-साहित्य एकराके ढग से जोगाओ। पुरान आ धनी भइला से संस्कृत-साहित्य सचहूँ अपना जिम्मेवारी के खूब निबहले बा।

एहिजा हम संस्कृत-साहित्य का कुछ ग्रन्थन में कहल मदनोत्सव भा वसन्तोत्सव पर बिचार करबि, जवना के अब होली कहल जाला।

संस्कृत के कवनो काव्य, नाटक, कथा, आख्यायिका पढल जाय, वसन्त ऋतु के उत्सव कवनो-कवनो बहाने मिलिए जाला। महाकवि कालिदास त वसन्तोत्सव के वर्णन करे के बहाना खोजत फिरेले। मेघदूत वर्षा-ऋतु के काव्य ह। ओकर आरंभे आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श' से होता। तबो यक्षप्रिया के फुलवारी का वर्णन में प्रिया के पायलभूषित चरणन का आघात से फुलाय खातिर लालायित मौलेसरी के चर्चा होइए गइल बाटे।

अशोक आ मौलेसरी के एह तरह से फुलवात्रे के उत्सव वसन्ते ऋतु में मनावल जाला। पहिले भारत में वसंत ऋतु उत्सव के ऋतु मानल जात रहे। काम-सूत्र में एह समय के कईगो उत्सवन के वर्णन भइल बा जवनामें दू गो महत्वपूर्ण बाटे—मदनोत्सव आ सुवसन्तक। भोजदेव का अनुसार सुवसन्तक वसन्तावतार चाहे वसन्तागमन का रूप में मनावल जात रहे। आजुओ त एक मास रितु आगे धावे का मोताबिक माघे में वसन्त पंचमी मनावल जाला। संभवत: सुवसन्तके ई वसन्तपंचमी ह आ मदनोत्सव होली।

संस्कृत का अउर ग्रंथन से मालुम होता जे फागुन-चइत में कई ढंग से वसन्तोत्सव मनावल जात रहे। एकर दूगो रूप सबका नीमन लागे। एगो त समाज का ओर से धूम-धाम से मनावल वसन्तोत्सव, आ दोसरका कामदेव के पूजा। सम्राट् हर्षदेव का रत्नावली नाटिका में एह दूनों ढंग का उत्सव के खूब नीमन वर्णन बा। ओह दिन सब नगरवासी सामूहिक रूप से हाथ का ताली,

मधुर संगीत आ मृदंग का मादक ध्वनि से सउँसे नगर के गुँजा देत रहन। सब लोग मदमस्त हो जात रहे। राजा अपना ऊँच अटारी से सब मजा लेसु। मरदे ना, मेहरारुओ अतना मस्ती में आ जासु जे सामने जेही मरद परि जाय, पिचकारी का रंग से नीचे से ऊपर तक लाले-लाल हो जाय। केसर-मिलल गमकत अबीर चारू ओर अइसन उड़त रहे जे कबो-कबो त दिनो में उषाकाल के भ्रम हो जात रहे। अइसन बुझाय जे अपना समृद्धि से कुबेरो के जीते के दावा करेवाली ई कौशाम्बी नगरी सुनहरा रंग में डुबा दिहल गइल बाटे।

ओह दिन बड़का लोग के घर का आँगन में फुहारा खूब जोर से फूटत रहे आ मदन का भाव से भरल नारी लोग के पिचकारी भरे में सहायक होत रहे। एहिजा ओह नगरवासिनी लोग का आवत रहला से, ओहलोग का देह से सेनुर आ अबीर झरला से, पाँके-पाँक हो गइल रहे आ पाँको लाल रंग के रहे।

धारायंत्रविमुक्त संतत पयः पूरप्लुते सर्वतः
सद्यः सान्द्रविमर्दकर्दमकृतक्रोडेक्षणं प्रांगणे
उद्दामप्रमदाकपोलनिपतत् सिन्दूर रागारुणः
सिन्दूरीक्रियते जनेनचरणन्यासैः पुरः कुट्टियम् ॥

वारवनितन का महल्ला में त हुड़दंग मचि जात रहे। ईहे नू होली के पुरनका रूप ह।

ई उत्सव खाली हुड़दंगिए ना रहे, एकर शान्तो रूप मिलेला। भवभूति का **मालतीमाधवे** में एह वसन्तोत्सव के एगो वर्णन मिलऽता जवनासे पता चलऽता कि मदन-बाग—जवन खाली एह उत्सवे खातिर बनावल जात रहे—एह मदनोत्सव के मुख्य केन्द्र होत रहे। एहमें कामदेव के मूर्त्ति बनत रहे। एहिजा सब मरद-मेहरारू जमा होके पूजा करसु। बड़ा शान्त भाव से लोग फूल तूरे, माला बनावे, नाच-गान करे आ अबीर उड़ाके मदनोत्सव मनावे। एह मंदिर में निमनो घर के मेहरारू लोग जाके पूजा करे आ नीमन वर पावे खातिर प्रार्थना करे। सबेरे से साँझ ले एह मदन-बाग में भीड़ लागल रहे। **मालतीमाधव** से ईहो मालुम होता जे मंत्री भूरिवसु के कन्या मालती कामदेव के पूजा करे खातिर एह मंदिर में आइल रहे। एह उत्सव में धरम-भाव के प्रधानता रहत रहे।

मत्स्यपुराण का अनुसार मदन देवता के एगो पूजा चइत महीना में होत रहे। अशोक का नीचे ऊजर कपड़ा से ढाँकल माटी के कलसा रखात रहे। ओहमें अच्छत (ऊजर चाउर) भरल जात रहे। फूल आ

ऊखि के रस एह पूजा के परसादी रहे। कलसा का ऊपर तामा के पत्तर आ ओकरा ऊपर केरा के पत्ता रखके ओकरा ऊपर कामदेव आ रति के प्रतिमा पधरावल जात रहे। ढेर कुल्हि सामान से देवता के पूजा कके खुस करे के बात सोचल जात रहे।

विष्णुधर्मोत्तर में मदन-मूर्ति बनावे के ढंग बताघत कहल बा जे मूर्त्ति के आठगो बाँहि रही, चारो पत्नी चारो ओर बइठल रहिहें। बाकी **शिल्परत्न** में खाली अतने बतावल बा जे ऊ मूर्त्ति खूब सुन्दर होखे के चाहीं। मूर्त्ति का बायाँ ओर **अभिलाषवती रती** आ दहिना ओर **गृहकर्मनिरता प्रीति**, ई दूनो पत्नी का रहे के चाहीं। ओह घरी जवन स्थायी मन्दिर बने ओहमें त दूनो तरह के मूर्त्ति बने, बाकी अशोक का नीचे जे अस्थायी मूर्त्ति बने ऊ दू बाँहिवाली होत रहे। **रत्नावली** नाटिका में राजा का मन में भ्रम हो जात बाटे जे साक्षात् कामदेव आके पूजा ले रहल बाड़न का।

भोजराज आ हर्षदेव का अनुसार काम-पूजा का दिने मेहरारू लोग कुसुमी रंग के सारी पहिरत रहे। कालिदास का **मालविकाग्निमित्र** नाटक में एह उत्सव के बड़ा मोहक वर्णन बाटे। एह नाटक से पता चलऽता कि काम-पूजा का बादे अशोक में फूल खिलावे के बिधि होत रहे। एह बिधि के ढंग एह तरह से बतावल गइल बा—केहू सुन्दर युवती सोरहो सिंगार कके, पैर में महावर लगाके, पायल पहिरके, बायाँ पैर से अशोक के हलुके से मारत रहे। चोट पाके एने पायल में झंकार होखे, ओने अशोक बड़ा उल्लास का साथे कान्हे पर से फुला उठे। ई काम प्रायः रानी करसु। बाकी **मालविकाग्निमित्र** में रानी का पैर में घाव लाग गइल रहे, एह से ऊ मालविका के भेजले रहली। मालविका अशोक का नीचे गइली आ नवकी पतइयन के गुच्छा हाँथ से पकड़िके अशोक पर हलुके चोट कइली। महाकवि कालिदास का कलम में अतना ताकत रहे कि ऊ एह दृश्य के अपूर्व बना देले बाड़े।

स्वप्नवासवदत्ता में बतावल बा कि रानी वासवदत्ता का देह के चमक तुरंते नहइला से अउरी चमकीला हो गइल रहे। ऊ कुसुमी रंग के सारी पहिरिके जब अशोक का नीचे कामदेव के पूजा करत रहे त ओकर अँचरा उड़ि-उड़ि जात रहे। तब राजा का बुझाइल जे नया दलवाला पेड़ पर लटकल ई नवकी लतर ह—

प्रत्यग्रमज्जनविशेषविविक्तकान्तिः
कौसुम्भरागरुचिरस्फुट दंशुकान्ता।
विभ्राजसे मकरकेतनमर्चयन्ती।
बालप्रवालविटपिप्रभवा लतेव ॥

मदन प्राणीमात्र के मदमत्त बनावेवाला देवता हवन। बाकी भारत आध्यात्मिक देश ह। वेद आ वैदिक साहित्य एह देश के राह बतावेवाला ह। एहसे एह देश के सब पूजा-पाठ आ विधि-विधान काम, लोभ, मोह आदि दुर्भावन से सुरक्षित राखिके आध्यात्मिक बल बढ़ावेवाला हवन स। ईहे बात बा जे नारदपुराण मे प्रभु के पाँचो रंग से पूजा कइला का बाद प्रसाद रूप में ऊ रंग ग्रहण करे के लिखल बाटे। एह तरह से मादकता-भरल होली भक्तिरस में सराबोर हो जाले।

होली का अवसर पर जवन गीत गावल जालन स ओहमें सिंगार आ मादकता का साथे आध्यात्मिक भाव कम नइखे। तबे नू होली मनाके मादकता से अपना के बचावल जाला।

एगो अउरी बात जाने लायक बाटे। तपस्या में लीन शंकरजी पर कामदेव वीरता देखावे चलले। शंकर जी अपना तिसरका आँखि से क्रोध के लपट निकालिके उनकाके जरा के अनंग बना दिहलीं। शंकरजी का सामने वीर मदन अबीर (कमजोर) बनि गइले। जबसे शंकर जी से हरले तबसे अबीर (मदन) का इयाद में अबीर (रंग) लगावल जाला। अर्थात् शंकरजी जेकराके अबीर (कमजोर) साबित क दिहलीं ओहके इयाद में एह रंगो के नाँव अबीर धरा गइल।

एह तरह से मुद्राराक्षस (नाटक) आ कादंबरी (उपन्यास) में कौमुदी-महोत्सव के चर्चा बाटे। अबो कौमुदी-महोत्सव मनावल जाला बाकिर शरत-पूनम के। वाल्मीकि रामायण में त वसंतवर्णन अतना सुन्दर हो गइल बा जे दोसरा पुस्तकन के वर्णन ओकर जुठि-आवल बुझाला।

संसार में करीब-करीब सब सभ्य आ आदिम जातियन में बसन्त ऋतु में जवानी के अउरी पागल बनावेवाला उत्सव पावल जालन स। कह-त सीमा का बाहर एकदम वासना भरल रूप में आ कहीं सीमा का भीतरे सबका नीमन लागे लायक रूप में।

शास्त्रन में वसन्त-पूजन एक महीना तक करत रहे के विधान बतावल गइल बा। करिया, हरियर, लाल, पीयर आ ऊजर—एह पाँच रंग से इष्टदेव के पूजा करे के बतावल गइल बाटे। आजुओ श्रीवल्लभ-संप्रदाय के वैष्णव लोग पाँचो रंग से पूजा करेला। ई सब रंग सुखले लगावल जालन स। घोरलो रंग देवता पर चढ़ावल जाला जवनामें केसर के प्रधानता रहेला। पहिले प्रभु पर सब रंग चढ़ाके तब परसादी रूप में वैष्णव लोग परस्पर लगावेला। ई वर्णन नारद-पुराण में बाटे।

आजुओ होली का मादकता में हमनीका धार्मिके भाव के प्रधानता देवे के चाहीं। तबे आपन संस्कृति सुरक्षित रही।

—डी० ए० वी० उच्च विद्यालय,
सीवान

भोजपुरी-कविता में सरद-बरनन

□ आद्याप्रसाद द्विवेदी

सतही दृष्टि से देखला प अदिमी से भिन्न सगरे लउकेवाली रचना प्रकृति कहाले जबकि दर्शन में प्रकृति के अउर गूढ़ अर्थ लिहल जाला। कवियन का संसार में प्रकृति अपना सामान्य अर्थ में ग्रहण कइल जाले। अदिमी का जीवन के विकास प्रकृति का खुलल अँगनइया में भइल बा। एहसे जिनिगी का कवनो धारा में ऊ प्रकृति के बिसरा ना सके। प्रकृति का हर परिवर्त्तन के प्रभाव धरती का सब प्रानिन पर पड़ेला। देखल जाला कि अमरइया में मोजर आवते कोइलरि कुहु कि-कुहु किके धरती-अकास एक क देले। बरखा रितु में कारी बदरिया देखते मोरन के पाँखि पसर जाला आ आ उन्हनीके पाँव थिरके लागेला। अदिमिओं प्रकृति का एह बदलाव से बाचल नइखे। अदिमी के मन प्रकृति के परिवर्त्तन देखिके कबो चिहा उठेला आ कबो उछाह से भरि उठेला। कविता जिनिगी के सुन्दर किलकारी ह। एह किलकारी में प्रकृति के बदलत रूपन के अनगिनित चित्र उभरेलन स। रितु-बरनन के परम्परा साहित्य में आदिए से चलि आ रहल बा। संस्कृत-साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि के रितु-बरनन बड़ा लोभावेवाला बा। महाकवि कालिदास ऋतुसंहार में रितु-बरनन करे में सब कवियन से आगे निकलि गइल बाड़न।

जब रितु-बरनन के बदरी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आ हिन्दी भाषा का धरती प लहरि-लहरिके बरिसल बा तब ओकरा लहरा से भोजपुरी के रसगर धरती कइसे छूटि जाई। भोजपुरी में अधिकतर कवि-लोग रितुअन का राजा बसन्त के आ रितुअन का रानी बरखा के ढेर रसगर बरनन कइले बाड़न। बाकिर सरद रितु के बरनन भी कम नइखे भइल। बरखा रितु का बितला प सरद के आगमन धरती का गोदी में होला। सरद के अगुआनी बदे प्रकृति रानी अद्‌भुत ढंग से आपन सिंगार करे लागेली। कादो-पाँकी आ पानी के सैलाब बिखेरेवाली बरखा रितु के बितते आ सुघर सरद रितु के लोही लगते कास ठठाइके हँसि उठेला, ताल-तलइयन में कुइयाँ के फूल अकास के जोन्ही नियन खिलखिला उठेला; बिना बादर के निझुरिक अकास में छितराइल अँजोरिया अपना भाग प मुसुका उठेले, खिड़रिच चिरईं अँगना-दुआर प ढुरि-ढुरिके सभकर मन गुदुरावे लागेले। अइसन बहार-वाली सरद रितु के सोभा, कालिदास

का बरनन में चान के सुघराई छोड़िके औरतन का मुख में, हंसन के किलकारी छोड़िके औरतन के बिछुअन का रुनझुन में आ अड़हुल का फूल के ललाई छोड़िके औरतन के होठन का ललाई में बास करेला—

स्त्रीणां विहाय वदनेषु शशाङ्कलक्ष्मी
काम्यं च हंसवचनं मणिनूपुरेषु
बन्धूककान्तिमधरेषु मनोहरेषु
क्वापि प्रयाति सुभगा शरदागमश्री ॥

महाकवि कालिदास का सरद-बरनन से अलग हटिके हिन्दी-भोजपुरी के जानल-मानल विद्वान डा० विवेकी राय सरद का बरनन में प्रकृति के अलगे रूप निरेखत बाड़न—

झूमि उठल मदभीनल बदरा, खंजन नयन निहार रे।
आइल सरद बहार रे, आइल सरद बहार ॥
पहरा बीति गइल पावस के, लोग भइल खुसहाल।
ताल-ताल पर कलरव उतरल, धरती भइल निहाल ॥
झलकलि पूरुब ओर भोर की गोरिया, दमकल भाल।
चमकलि पाँव पखारलि मोती, गमकल मलल गुलाल ॥

सरद रितु में सगरे ताल-तलइयन में निरमल पानी झलक उठेला। कवनो अइसन तलाव ना होई जवनामें ऊजर, छाछप पानी लहर ना लेत होखे आ ओकरा बीच में कमलन के कतार खिलखिलात ना देखाई देत देत होखे आ ओह कमलन प भँवरा अपना गुन-गुन के तान से बाँसुरी ना बजावत होखे आ भँवरन के मन अइसन सुहावन रितु के पाके बहक ना जात होखे। अइसने सिंगार में सँवरल सरद कि रूप निरखत भोजपुरी के मधुर गीतकार श्री रामेश्वरप्रसाद सिनहा कहत बाड़न—

सिहरि-सिहरि सरके बयार
हँसि जाला अँगना दुआर
सदरवा सँवारे सिंगार।
साँस-साँस के सितार बाजल
झनकि रहल लहराके छागल
रात मधुर अँखियन में उतरलि
सुधिया का डोली में साजल
भँवरन के बहकल खुमार
कलियन के सहकल दुलार
सरदवा सँवारे सिंगार।

सरद में धान का बालिन के पाक गइला से ओपर बिखरल पियराई देखते बनेला। बालिन का भार से धान के मुँह नीचे का ओर झुकल रहेला। जानि पड़ेला कि तलइयन में खिलल कमल आ कुइयाँ का फूलन के सुगंध लेवे बदे धान के पौधा झुकल बा। धान से लहलहात खेतन के सिंगार देखिके किसान के मन हुलसि उठेला। खरिहानन में सगरे सरेह के लछिमी बटुरि आवेली। अइसन रितु में किसान खातिर कवि का मन में कतना उछाह बा, एकर बरनन करत रामनाथ पाठक 'प्रणयी' अपना बधार शीर्षक कविता में लिखत बाड़न—

धनवाँ प चढ़ल धनि, सोनवाँ के पनियाँ
छवियो प रसे-रसे अइंठे जवनियाँ
देखिके बरेला मन कतहूँ कटनियाँ
कतहूँ लोभाला मन देखि खरिहनियाँ

सरद का अइला पर जहाँ धरती के अँचरा धान का बालिन से सुगापंखी भइल बा उहें अपना मन के साध पूरत देखिके गोरी के कँगनो खनकि रहल बा। देखीं, कइसन खूबी के साथ रामेश्वरप्रसाद सिनहा सरद के अइसने रूप निहरले बाड़न—

अइले सरदवा कि लहसेला मनवाँ
झिलमिल झलके तलइया में चनवाँ।
रहि-रहि झूमे सुगापँखिया सरेहिया
धरती के अँचरा प लहरे सपनवाँ।
पिहि-पिहि पिहिकेला मन के पपिहरा
कसि-कसि खनकेला गोरी के कँगनवाँ।
सिहरि-सिहरि जाला जिनिगी के पतवा
पुरुबा बेयरिया चलावे मधुबनवाँ।
अँचरा बटोरिके उचकि झाँके नदिया
रहि-रहि मटकी चलावेला गगनवाँ।

सरद रितु बिरहिन बदे मिलन के सनेस लेके आवेले। बरसात में जवन नायिका बिरह में तलफत रहेले ऊ सरद का आवते अपना पिया के पाके अघा उठेले। भोजपुरी के जानल-मानल गीतकार रामनाथ पाठक 'प्रणयी' पिया के अवाई का उछाह में अगराइल नायिका का मन के परत खोलऽताड़न। रचना में बिरहिन नायिका का मन के उछाह सरद का प्रकृति सँगे उड़ि रहल बा—

सरद के लहँगा लहराइल।
बाज उठल केकर दो पायल,
के दो मुसुकाइल।
बीति गइल बरखा के पहरा,
सिहरावन लागे भिनुसहरा,
ताल-ताल में लाल उमरिया
खिल-खिल इठलाइल।
साफ भइल आकास सुहावन,
खंजरीक उतरल मनभावन,
रात-रात भर पात-पात पर
मोती छितराइल।
आँगन-आँगन में अगुआनी,
पूजा-दीप अरघ के पानी,
उड़ल चान के उड़नखटोला,
बलमा घर आइल।

सरद में चाँद के रूप कुछ अजब हो जाला। कहल जाला कि कुआर का चाँदनी में चनरमा अमिरित के बरखा करेलन। सरद पुरनवाँसी का राति में अकास से टपकत अमृत के बूँद छत पर धइल खीर में अजबे सवाद ले आ देला। चारू ओर छिटकल मधुर चाँदनी में मन एकदम डूबि जाला। धरती के अँचरा का छाँह में अइसन चाँद के चाँदनी आ रजनीगंधा के मातल गमक अगर प्रेमिका का मन के बहका दे त का कहल जाय। बच्चन पाठक 'सलिल' लिखले बाड़न—

चान चहकत बा त चहक जाये द
रजनीगंधा के तूँ महक जाये द
ई चाननी रात आ हम तूँ रानी
मनवाँ जे बहके त बहक जाये द।

लेकिन 'अंजोर' गाजीपुरी के त सरद के चाँद दरपन देखाके अपना ओर खींचि रहल बा—

धरती के बिहँसे अँगनवाँ,
सेयान भइले आल्हर सपनवाँ;
धानी रँग चुनरी पेन्हावेले बधरिया,

सगुन उचारेला सुगनवाँ।
बान्हेले अँजोरिया चानी के करधनियाँ
चनवाँ देखावे दरपनवाँ॥

संस्कृत-कवियन में कालिदासके ऋतुसंहार में सरद के नया कनियाँ का का रूप में बरनन कइल गइल बा। खिलल कास के फूल एह कनियाँ के ऊजर-धपधप साड़ी ह। तलइयन में फुलाइल कमल एकर सुघर मुँह ह। किलकत हंसन के सोर एह सुन्दर कनियाँ का पाँव के बिछुअन के रुन-झुन ह। पियराइल धान का खेतन के सोभा एकरा देह के सुघराई ह—

काशांशुका विकच पद्ममनोज्ञवक्त्रा
सोन्माद हंसनूपुरनादरम्या
आपक्वशालिरुचिरा तनुगात्रयष्टिः
प्राप्ता शरन्नववधूरिव रूपरम्या॥

भोजपुरी-कवि 'स्वर्णकिरण' सरद के एगो अलगे नजर से देखले बाड़न जवनामें भोजपुरी माटी के गन्ध महमहात बा। ई चित्र नयी कविता का तर्ज में बा—

बकुला अइसन उज्जर-उज्जर साड़ी पेन्हले
इ सरद रागनी तलमलात कुछ-कुछ हाँफत
बार अझुराइल, कवनो तेल पड़ल ना
हरसिंगार के गंध भरल जूड़ा कइसन ।

तारकेश्वर उपाध्याय के सरद चलि आइल में सरद अइला के बरनन देखल जाय—

भागलि हँसति बेयार, डगर मुसुकाइल
बादर लिहलसि चैन, सरद चलि आइल ।
गावे लागल ताल तलैया नाचलि

सरद-बरनन का प्रसंग में अगर भोजपुरी-लोकगीतन के चरचा ना कइल जाय त बात पुरहर ना हो पाई । देखीं, कालिदास का बरनन से टक्कर लेत कवना तरह से नीचे के सोहर में सरद के रूप निहारल गइल बा—

सरद सुघर चलि आइल, मन हरिआइल नु हो ॥
तरई हँसे खोरी-खोरी
सनेहिया के ओरी
खींचत सुधि डोरी नु हो ।
सखिया,
दुधवा नहइली अँजोरिया त चान अगराइल नु हो ।
सखिया,
कली-कली चुमिके भँवरवा, चलल भँगुआइल नु हो ।

लोकगीतन में बारहमासा का भीतर कुआर आ कातिक माह में बिरहिन के बड़ा दगधल रूप उतरल बा । कवनो बिरहिन सरद के अइसन मनभावन रितु में, जवनामें सिहिर-सिहिर चलेवाली बेयार तन-मन के सिहरा देतिआ, पिया के आस लगवले आपन दरद सखी से बतावत कहतिआ कि अगर एह महीना में पिया अइतन त हम धरतीके के कहे, अकास तकले दीया बारके उनकर आरती उतरितीं —

कुआर ए सखि आस लागे जोहीं पिया के बाट हो ।
लोभी कन्त बिदेस गइले, भोर भइल भिनुसार हो ॥
कातिक मास बिदेस ए सखि, पिया जे रहिते साथ में ।
दूख-सुख सब संगे कटितीं दीया बरितीं अकास में ॥

लोकगीत के एह अनचीन्ह रचयिता के बिरह-बरनन सुनिके जायसी का पदमावत काव्य के बिरहिन नायिका नागमती के अचके में इयाद उतरि आवत बा जब ऊ सरद रितु के देखिके अपना मन के हुमास उतारऽतिआ—

एहि रितु कंता पास जेहि, सुख तेहि के हिय माँह ।
धनि हँसि लागै पिउ गरै, धनि गर पिउ कै बाँह ।।

भोजपुरी के कविलोग खाली सरद रितु के' सिंगारे नइखन निहरले । ओहलोग के पियार-दुलार देश के सान-गुमान, किसानन पर भी बा। सरद के बखरा में आइल ई महीना, कुआर आ कातिक, किसानी बदे ढेर महत्त्व के होला। देखीं, रामविचार पांडेय कइसे अपना रसगर गीत में किसान के आ गरीबी में अपना जवानी तोपत किसान का मेहरारू के बरनन सरद का प्रसंग में कइले बाड़न—

बीति गइले बरखा, निखरि गइले पलिहर,
हर जोते बलमा, चुएला देहीं पनियाँ ।
उन्हुका के तियना आ लीटी लेके, पानी लेके
झटकल चलली साँवरि एक धनियाँ ।।
लूगरी से तोपि-तोपि, ठमकि-ठमकि चले
छलकि-छलकि उठे चढ़ली जवनियाँ ।।

कहल जा सकेला कि सरद रितु का बरनन से भोजपुरी-कविलोग अघाइल नइखे । भोजपुरी-कविता एहमें संस्कृत से होड़ लिहले बा ।

—अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
सतीशचन्द्र कॉलेज, बलिया



भारी ना—भाई

□ सुरेश कुमार

साल-संबत त याद नइखे, बाकिर ई याद बा कि काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा में कवनो समारोह रहे जवनामें ढेर साहित्यकार लोगन के जुटान भइल रहे। हम राजासाहेब के गाँधी टोपी अउर सावनी समाँ छपवावे खातिर बनारसे में रहत रहीं। के-के पहुँचल रहे, एकर पूरा हुलिया दिहल त मोसकिल बा बाकिर निरालाजी के भारी भरकम डीलडौल आ लंबाई-चौड़ाई से भरपूर पहलवानी देहि अउर दुखहरन लाठी के नकसा त आजुओ आँखि का आगा जस-के-तस बनल बा। सुदर्शनो जी रहलन।

जब कहानी के प्लाट पर चरचा चलल त सुदर्शन जी कहलन कि कहानी के प्लाट त हमनीका आगा-पाछा, ऊपर-नीचे, दहिने-बायें, सगरो अइसहीं छितराइल फिरेला—ई हमनी के कमी बा कि ओकरा प धेयान ना दीहीं जा आ हाँथ पसारिके बटोरि ना लीहीं जा। हम त एक बेरि एगो प्लाट अइसन अचक्के में पा गइलीं कि खुदे अचंभा में परि गइलीं। बात ई भइल कि एगो पहाड़ी तराई में घूमत रहीं, तले एगो पाँच साल के लड़की भेंटा गइलि। ऊ दू बरिस के एगो लइका के गोदी में उठाके ले चले के फिराक में आकुल-बेयाकुल रहे। लइका मोटा-ताजा रहे—उठबे ना करे। बहुत जोर लगा के काँखि-कूँखि के उठाइओ ले त लइका लरकि जाय आ ऊ लइकी थस से बइठि जाय। अइसहीं बहुत देर तक होत रहल। हम कुछ दूरे से ई तमासा देखत रहीं। जब देखलीं कि लइकी अपना लिलार से पसीना पोंछिके आ हाँफिके फेनु लइका के उठावे लागलि त हमरासे ना रहाइल आ आगे बढ़िके लइकी का पासे पहुँचि गइलीं। हमराके देखिके लइकी पहिले त कुछ लजाइलि आ सकपकाइलि बाकिर फेनु अपना धुन में लागि गइलि—आपन काम बंद ना कइलसि। हम कहलीं कि 'ए बचिया, काहे जान देले बाड़िस, ई लइका भारी बा, तोरा से ना उठी, माई के बोला ले।' लइकी हमार बात सुनिके कुछ अइसन चिहइला आँखि से हमराके घूरलसि कि ई कहाँ से जाहिल-गँवार, भकुआ-भकचोन्हर आ गइल कि एकरा के भारी कहऽता। तुरंते लइका के फेनु गोदी में उठावे लागलि आ हमरा सवाल के अइसन जबाब देलसि कि ओह छोट लइकी का आगा हम ओकरोसे छोट हो गइलीं। ऊ झटकिके कहलसि कि 'बेत्, ई भारी ह कि भाई ह!' अब बताईं, हमार पढ़ल-लिखल अकिलि कहाँ गइलि जे भाई के भारी कहि दिहलीं! अब एहसे बढ़िके प्लाट कहानी के का होई? □

जीवन—दर्शन

□ अवधेन्द्रदेव नारायण

हमरा जिनिगी का कन्वास प
घुप्प अन्हरिया आके जमकल बा;
भरम-चकोह में फँसल
परान उभचुभा रहल बा ;
मन के खिलल फूल
झर-झरके अइँठा गइल बा।

हवा का साथे महक
बहक के
पुरान याद उकेर देता ;
समय के साँप
जीभ लपलपावत
सरकत
नगिचे बइठके
टुकुर-टुकुर हेरऽता।
अमवसा का रातमें,
घात लगवले,
पोर-पोर में
झिनझिनी भर-भरके
सिहरा-सिहा देता
लोराइल अँखियन से
समय के दूरी
पहचनातो नइखे,
काहे कि
हमरा जिनिगी का कन्वास प
घुप्प अन्हरिया आके जमकल बा।

— प्रमंडलीय लेखापाल,
राज्य-पथ-परिवहन-निगम, गया

सोहागरात

□ जवाहर सिंह

जनारदन के बियाह तय हो गइल। तय भइल का, तय कर दिहल गइल। ऊ खूब रोग्रले- गड़गिड़इले···छान-पगहा तुरवले, बाकिर उनकर बाप रामभजन तिवारी अन्त में उनकर बोलती बन्द कर देले। हित-पाहुन आ टोल-पड़ोस के बूढ़-पुरनियाँ लोग त बहुत देर से बात का चक्रव्यूह में घेर के जनारदन के रगरत रहे लोग··· सास्तर-बेद का रन्दा से उनकरा तर्क का धार के भोथरा का कोसिस में लागल रहे, बाकिर बार-बार ऊ अपना बुद्धि का कइँची आ बेकारी-लाचारी का हथौड़ा से श्रोह चक्रव्यूह के काट-तूरके बाहर निकल भागस। अन्त में कवनो उपाय ना देखके उनकर बाप, पंडित रामभजन तिवारी, बाप वाला एसपेशल 'वीटो' के ब्रह्मास्त्र चला देले। खिसियाके बोलले—"बहुत देर से बकर-बकर कइले बाड़े, तें हमरा एके सवाल के जबाब दे जनरदनवाँ! बोल, हम तोर के हईं?"

"पि···ता···जी।" जनारदन मूड़ी नीचा झुकवले घिघियइले।

"हँऽऽ, ठीक बा। पिताजी कह, चाहे बाप कह, एके बात भइल। अब तें बताव कि बाप केकराके कहाला···पिता के होला! बोल···!"

जनारदन के बुद्धि चकरा गइल। अपना बी० ए० तक का इम्तहान में ऊ तरह-तरह के सवालन के जबाब रटले रहले आ परीक्षा का कापियन में लिखके नीमन ढंग से बी० ए० पास कइले रहले, बाकिर अइसन पेंचदार सवाल से उनकरा कबहीं पाला ना पड़ल रहे। देखे-सुने में त सवाल बड़ा हलुक रहे, लेकिन एकर उत्तर कइसे देस, एकर ओर-छोर उनका ना बुझाय।

बहुत देर ले अरुअइला पीठा नियन मुँह बनवले जनारदन अपना बाप का ओर बकर-बकर ताकते रह गइले। जब उनकरा मुँह से कवनो बकार ना निकलल त रामभजन तिवारी खुदे रुखी का पोंछ नियर झबरइला मोंछ का बीचे से चौअनियाँ मुसकी के चान उगावत बोलले, "जे बा से, एके सवाल में सब पढ़गित घुसर गइल नू! देख बबुआ, एकर जबाब तोरा तब बुझाई जब तोर बियाह होई आ बाल-बच्चा होई। ····जे अपना खून-बीज से सन्तान पैदा करेला ऊहे बाप कहाला। एहीसे बाप के अतना महातम मानल गइल बा। सासतर-बेद में भगवान का बाद पिता के स्थान दिहल गइल बा। बाप के आज्ञा जे ना माने ओकरा नरको में जगह ना मिले। पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्रजी अपना पिता के

आज्ञा मानके चउदह बरिस बनवास के दुख भोगे खातिर तुरन्ते तइयार हो गइलीं आ एगो तूँ बाड़ऽ ससुरू कि बियाह जइसन अमृतफल पावे खातिर बाप के आज्ञा माने के तइयार नइखऽ होत… ! इहे नू कहाला कि घीव देत घोड़ नरिआय !'

बाहर का गरमी आ भीतर का किरोध से बुढ़ऊ का माथा आ चेहरा पर पसेना चुहचुहा गइल रहे। गमछी से लिलार के पसेना पोंछके ऊ फेर बोले लगले — "सास्तर में लिखल बा, जे बेटा बाप का मुअला पर बिधि-विधान से उनकर सराध-करम ना करे ….बाभन-बिसुन के खियावे ना…गया जी में जाके पिंडादान ना करे ऊ पितृ-ऋण से मुक्ती ना पावे। ओइसहीं बेटा-बेटी के जनमवला का पाप से मुक्ती पावे खातिर बाप-मतारी के भी धरम ह कि अपना जिनिगिए में ओकर बियाह-सादी करके पुत्र-पुत्री-ऋण से मुक्त हो जाईं। चार बेटी आ दू बेटा के बियाह हम कर चुकल बानी। अब एगो तूँहीं कुँआर रह गहल बाड़ऽ। हमरा जिनिगी के अब कवनो ठीक-ठेकाना नइखे। पाकल आम बानी, इचिको हवा-बेयार में अचक्के कहियो टपक जाइब। तूँ का चाहत बाड़ऽ कि हम पुत्र-ऋण के गठरी माथा पर धइले मर जाईं आ नरक में परल-परल सरत रहीं ‥हमार आत्मा प्रेत-योनि में भटकत रहे ‥?"

रामभजन तिवारी पढ़ले त गाँव का संसकिरित-पाठशाला में प्रथमे तक रहले बाकिर अपना नाना पंडित शिव-ध्यान उपध्या का साथे जजमनिका में घूमत-घूमत कथा-पूजा करे-करावेवाला सब मंतर आ बिधि-बिधान मुँह जबानिए इयाद कर लेले रहले। अपना बाप का जिनिगि में जज-मनिका के काम सम्हार लेले। चाहे सतनारायन बाबा आ तिरलोकी नाथ के कथा होखे, चाहे बियाह-सराध, चाहे केहूके लइका-लइकी के टीपन बनावे आ गनना बइठावे के होखे, चाहे गवना-बिदाई के सुदिन निकाले के आ पारथी पूजे के—सउँसे गाँव रामभजन बाबा का दुआरी के माटी कोड़ के खा जाला। आज ले सास्तर-पुरान-वेद देखले त नइखन बाकिर उनकरा मुँह से सास्तर-वेद के वचन आ 'पितृ-ऋण', 'पुत्र-ऋण' अइसन भारी-भरकम शब्द सुनके जनारदन के हवा गुम हो गइल। उनकर सब तर्क आ विरोध आँधी में भूआ अस उड़ गइल।

थोरकी देर बाद जनारदन एक हाली फेर साहस बटोरके बाप का आगे गिड़गिड़ाय के सुरू कइले, "देखीं बाबूजी, रउआ हमार बात समुझे के कोसिस करीं। अबहीं त हम खुदे परिवार का सिर प बोझा बनल बानी, दोसर बोझा हमरा घेंट में काहे बान्हऽतानी ! भाई लोग के हालत देखिए रहल बानी। दूनों जना कमा-कमाके अपने मेहरारू आ बाल-बच्चन

के सभाखन में लागल बा लोग। रउआ खइनी चूना खातिर दोसरा का आगे हाथ फइलावे के पड़त बा आ दूनों जानी भौजाई लोग का गांव में बेहवर-बाटा चलत बा। पुरोहिताई आ जजमनिका से अब कवनो अमदनी होत नइखे आ दिदिया लोग का बिआह में आधा से अधिका खेत साहु-महाजन किहाँ बिकाइए गइल बा। अब त साल में दुइओ-चार महीना चले लाएक अनाज खेत में नइखे होत। सूद पर करजा लेके कसहूँ काम चलऽता। हमरा खातिर अबहीं त अपने पेट पहाड़ भइल बा। एह हालत में बियाह कके एगो आउर खायवाला मुँह घर में ले आइल कवन जरूरी बा! एहीसे हम कहत बानी कि जब ले हमार कहीं नोकरी-चाकरी ना लाग जाय तब ले हमार बिआह मत करीं॰॰ हमार ईहे रउआ से बिनती बा। नोकरी खातिर हम॰॰॰'

"चुप, ससुरा! नोकरी॰॰॰॰नोकरी नोकरी॰॰॰॰!" जनारदन के बात बीचे में काटके रामभजन तिवारी कटहा कुत्ता नियर झोंझिया के उनकरा पर टूट पड़ले, "चार साल से एके बात सुनत-सुनत हमार कान पाक गइल। मिल चुकल तोहरा नोकरी आ बन-चुकलऽ तूँ जज-कलट्टर॰॰॰॰! तोरा पढ़ाई का चलते हम दलिद्दर हो गइलीं॰॰॰॰करजा में डूब गइलीं॰॰॰॰डेढ़ बिगहा खेतो जरपेसगी रख देलीं। पेट काटके आ फटही धोती पेन्हके हम तोरा कवलेज के खरचा जुटवलीं। चार बरिस हो गइल तोरा बी॰ ए॰ पास कइला॰॰॰॰चार साल से तें नोकरी खोज रहल बाड़े॰॰॰हमार हजारन रुपया नोकरी खोजे का पाछा फूँकके ताप गइले! रोज दरखास॰॰॰॰ रोज इन्टरभिउ॰॰॰रोज पटना॰॰॰॰आरा ॰॰॰छपरा—ईहे सब करत तोरा चार बरिस बीत गइल। लोअर इस्कूल के मास्टरी ले तोरा ना मिलल आ तोरे साथ के पढ़ल ऊ ढोंढ़वा चमरा के बेटा हुलसवा बी॰ डी॰ ओ॰ बन गइल॰॰॰॰ रामदेव सिंह के पोता रजिस्टरी आफिस में बाबू बनके रुपया झँझोरके ध देलस॰॰॰। अब कहिया तोरा नोकरी मिली॰॰॰! ॰॰॰॰कहिया तें अपना पाँव पर खड़ा होइबे कि बियाह-सादी करबे! कब ले हम धीरज बान्हीं॰॰॰॰ कब ले तोरा नोकरी के बाट जोहीं॰॰॰॰!'

एके साँस में बोलत-बोलत बुढ़ऊ तिवारीजी के दम फूले लागल त ऊ एक-दू छन ले चुप होके जोर-जोर से साँस लेवे लागले। चारो ओर एकदम सनाटा छा गइल। केहुका मुँह से कवनो बकार ना फूटे। थोड़े देर में जब बुढ़ऊ के साँस कुछ असथिर भइल तब दू-तीन बेर खँखारके, गला साफ करके जनारदन से बोलले—"देख जनरदनवाँ, सादी-बियाह का एह सुभ-मंगल काम में बिघिन मत डाल। जइसे मर-जीके घर के सब प्रानी के पेट भरत बानी, ओइसहीं तोरा जनानो

के भरब। जबले हमार पौरुख चली तबले घर का सब बेकतिन के मोट-पातर कपड़ा आ अन्न के दुख ना होखे देब। जब हमार आँख मुँदा जाई, तब तोहनी के भगवान मालिक....।"

जनारदन सिर नीचे झुकवले चुपचाप बइठल रहले। टोला-पड़ोस के लोग एक-एक करके गँवें उठके, अपना घरे चल गइल। बइठका सुनसान हो गइल। तिवारी बाबा चुनउटी से खइनी-चूना निकालके तरहथी पर जल्दी-जल्दी दू-चार बेर रगरके ओठ में दबले आ बटुली अतहत अपन बड़का पितरिया लोटा दिअरखा प से उतार के कान्ह प जनेव लपेटत खेत का ओर चल देले।

एक-डेढ़ घरी रात बीत गइल रहे। तिवारी बाबा सिवाला में से पूजा पाठ करके घरे लवटले तब बाहरवाला ओसरा में खरहरे चउकी पर जनारदन के पेटकुनिएँ परइल देखके उनका बड़ा अचरज भइल। उनकरा लगे जाके चुपचाप ठाढ़ हो गइले। जनारदन मुँहकुरिए सूतके धीरे-धीरे फफक फफकके रोअत रहले। पच्चीस-छाब्बिस बरिस के जवान बेटा के टूअर-टापर, अबोध लइका नियन सुसुक-सुसुकके रोवत देखके तिवारी बाबा का अइसन बुझाइल जइसे उनका हिरदेया के केहू भितरे-भीतर भींजल कपड़ा नियन दूनों हाँथ से धरके खूब जोर से ममोरे लागल होखे। एगो अजब, अनबूझ पीड़ा से ऊ कसमसाके रह गइले। उनकरा बुझाइल, सामने का एह चउकी प मुरदा नियन पड़ल ई आदमी उनकर बेटा जनारदन ना ह..........कम-से-कम ई आदमी ऊ जनारदन त हरगिज ना हो सके जे उनकाके घर के खरचा जुटावे आ रुपया-पइसा का फिकिर में पड़ल देखके हँसत-हँसत कहत रहे कि बाबूजी, बस साल भर के देरी बा, हमराके बी० ए० पास करके निकल जाय दीं, रउआ के हम एह सब झंझट से मुक्ती दिया देब.. महाजन लोग के सारा करजा चुका देब... रेहन पड़ल आपन खेत छोड़ा लेब आ रउआ के जजम-निको का झमेला से अलग क देब। बी० ए० पास करके नोकरी करे लागब त रउआ के जजमनिका में ना जाए देब। हमरा ई जजमनिका के काम एक तरे के भिखमँगिए बुझाला ....हमरा ई एकदम नीमन ना लागे कि रउआ जजमान लोग का दुआरी-दुआरी घूमके अगऊँ आ सीधा माँगत फिरीं.........!

"जनारदन जब ई सब बात कहत रहे तब हमार हिरदेया जुड़ा जात रहे"—तिवारी बाबा जइसे अपने आप से कहले, "ई पुरोहिताई आ जजमनिका त अपना घटले करेके पड़ेला ना त ई कवनो नीमन काम ह! पहिले के लोग गुरु-पुरोहित के सरधा- भक्ती से दान-पुन करत रहल बाकिर अब त केहू जजमान का दुआरी पहुँचला प ओकरा सिर

रथ जइसे घइलन पानी पड़ जाला। अइसन बात-बेहवार करेला जइसे कवनो चोर-गिरहकट ओकरा दुआरी पर पहुँच गइल होखे। ईहे सोचके त हम अपना तीनों लइकन के संस-किरित ना पढ़ाके अँगरेजी इस्कूल में पढ़े के भेजली। बड़कू आ मंझिलू त छठवाँ-सतवाँ किलास से आगे ना पढ़ पवले बाकिर ई जनरदनवाँ पढ़े में खूब मन लगवलस आ एकर चानस भी तेज रहे। पढ़त-पढ़त बी० ए० पास क लेलस। मन में उमेद जागल कि अब घर के दुख-दलिद्दर भाग जाई… हमरा एह जजमनिका-बृत्ति से छुटकारा मिल जाई। बाकिर हमरा आस पर ओस पड़ गइल। चार साल हो गइल एकरा बी० ए० पास कइला, अबहीं ले कवनो नोकरी-चाकरी एकरा ना मिलल।

'नोकरी खातिर जनरदनवाँ कोरसिस त कम ना कइलस……दिन-रात ओही धुन में लागल रहेला, बाकिर एकर भागे खराब बा। जब भाग में लिखल होखे तबे नू नोकरी मिलो। एकरा के हम का दोस दीं…… सब भाग आ भगवान का हाथ में बा……।'' "ईहे सब सोचत-सोचत तिवारी बाबा का मन में अपना एह छोटका दुलरुआ बेटा जनारदन खातिर ना जाने कहाँ से अतना मोह–ममता उमड़ आइल कि उनकरा बूढ़ आँखिन से टप-टप लोर चूए लागल। ओही चउकी प बइठके ऊ धीरे-धीरे जनार-दन के पीठ सुहरावे लगले। बाप के दुलार-भरल हाँथ अपना पीठ पर अनुभव करके जनारदन के रोआई अउरू जोर से फूट पड़ल। रोअते-रोअत ऊ बोलेले—"बाबूजी, कहीं से माहुर ले आके हमराके दे दीं कि हम खाके मर जाईं। हमरा अब जीये के मन नइखे। हमार जिनगी अकारथ बा …· हम केहूके कवनो सुख ना दे सकलीं……"

'बेटा जनारदन!'' तिवारी बाबा बड़ा मोसकिल से धीरज के बाँध तूरके भीतर से उमड़ल आवत रोआई प काबू करके बोलले, "तोहरा ई का हो गइल……! अतना पढ़ल-लिखल बिदवान आ जवान होके तू राँड़-बेवा नियन रोअत बाड़ऽ! जेकरा नोकरी ना मिले ऊ का मर जाला? आँख उठाके देखऽ त, एह गाँव में कतना लोग नोकरी करेला! आखिर कवनो-ना-कवनो अवावत कके सब लोग अपना बाल-बच्चा आ परिवार के पालत-पोसत बा कि ना! हमनीके पुरनियाँ लोग त कबहीं कवनो नोकरी-चाकरी ना कइल …· एही धरती से उपराज के आपन आ अपना लोग-लइका के पेट पालल……।

"अरे पगला, ना मिली नोकरी त मत मिलो। अबहीं दू-अढ़ाई बिगहा जमीन बाँचल बा, सैकड़न घर जजम-

निका बा। पढ़ल-लिखल तूँ बड़ले बाड़ऽ, हमरा पास बियाह, सराध, जनेव, उपनयन, कथा-पूजा — करावे वाली सब पोथी बड़ले बा, लेके पढ़ ल आ पुरोहिताई के काम सुरु कर द। कतनो जबाना विगड़ल बा त का ह, भगवान का किरपा से तोहरा कभी अन्न-वस्तर के दुख ना होई। आखिर हमरा मरला का बाद ई काम केहू का त करहीं के पाड़त। हँसी-खुसी से बियाह होखे द, सुभ का काम में रोवल ठीक ना ह। हम त्रिपाठी जी के सादी के वचन दे चुकल बानी। एह बुढ़ापा में हमार पगड़ी हेठ मत करऽ। चकिया के त्रिपाठी खान्दान बड़ा कुलीन आ इज्जती ह। उनकर लइकी भी सुन्दर आ पढ़ल-लिखल बिआ। कहत रहले कि कौलेज में दू साल पढ़ल बिआ। अब तोहरा का चाहीं। आपन भाग मनावऽ कि ओइसना कुलीन खान्दान के अच्छत तोहरा सिर प पड़ऽता। त्रिपाठीजी रजिस्टरी आफिस के खूब चालू-पुर्जा ताईद हवन, खूब पइसा कमइले बाड़े। तिलक-दहेज अच्छा दिहें। तूँ घबराइल काहें बाड़ऽ! भगवान के किरपा होई त ऊहे तोहराके कवनो नोकरी-चाकरी भी लगा दिहें। तूँ कवनों बात के फिकिर मत करऽ। हम अबहीं जिन्दा बड़ले बानी.... तूँ काहे अपना के अतना अकेला बूझत बाड़ऽ। कवनो लूल्ह-लाँगड़-आँन्हर-भेभर त नइखऽ, मेहनत-मजदूरी करके भी अपना बाल-बच्चन के पेट पाल सकेलऽ...... ।'

एकरा बाद जनारदन के हिम्मत ना पड़ल अपना बाप का सामने कुछ बोले के। ऊ चुपचाप उठके बाहर का ओर निकल गइले।

बियाह करे के मन जनारदन के बिलकुले ना होखे. अइसनो बात ना रहे। छब्बिस साल के उनकरा जवान देह का नस-नस में कबो-कबो अइसन तनाव भर जाला .... खून भितरे-भीतर खउलके बाहर निकले खातिर अइसन जोर मारे लागेला कि कुछ देर खातिर जनारदन एकदम बेचैन हो जाले........ उनकर मन अइसन पगला जाला कि इच्छा होखे लागेला, केकराके उठाके पटकके रगर दीं... ...केकराके पीट दीं............ कवन चीज तूर-फोर दीं......... का करीं, का ना करीं। कबहीं-कबहीं उनकरा भीतर एगो गजबे तरह के सुरसुरी आ गुदगुदी होखे लागेला जवनाके कवनो कारन आ कवनो अर्थ ऊ ना समुझ पावस। रात का एकान्त में अपना खटिया पर आँख मूँदके कतना-कतना देर ले ऊ पड़ल-पड़ल करवट बदलत रहेले, बाकिर नींद ना आवे। मन का भीतर के कवनो अबोध-कुआर इच्छा, कवनो अनचीन्हस-अनभोगल सुख का खोज में उनकरा के कातिक के कुत्ता अस गली-गली आवारा भटकावत-दउरावत जब थका देले तब ऊ उबिया-खिझिया के अपने हाथ से अपना दूनों गाल पर तड़ातड़ थप्पड़ मारे लागेले। उनकरा साफ-साफ ई ना बुझाय कि

अइसन काहे होता। पहिले त उनका भीतर ई रोग ना रहल····अब कहाँ से आ गइल···कइसे ई रोग लाग गइल !

तन आ मन का अइसने हालत में कबो-कबो जनारदन का बुझाला कि ऊ एगो ना, दूगो बाड़े। एगो जनारदन भीतर, दोसर जनारदन बाहर। भीतर का अन्हारा कोना में छिपके बइठल जनारदन कुछ कुछ पागल, बुरबक, जिद्दी, मनमउजी; आवारा किसिम के नटखट छोकरा ह। ओकरा कवनो हब, खब, ऊँच-नीच ना बुझाय····बिना लगाम का घोड़ा अस जेने मन करेला ओने सरपट दउरल फिरेला····छुट्टा साँढ़ नियर सगरे हरिअरिए तिकवत चलेला लेकिन बाहरवाला जनारदन का ओकर चाल तनिको ना सोहाय। ओह मनबढ़ल-बिगड़इल जनारदन के ई बाहरवाला शान्त आ समझदार जब-तब कान अइँठ के दू-चार तबड़ाक लगा देला आ अकेला में ले जाके दुलार-पुचकार के ऊँच-नीच···नीमन बाउर के भेद समुझावे लागेला। कुछ देर ले दूनों जनारदन का बीच खूब उठा-पटक···तू-तू-मैं मैं···हाँथा-बाहीं आ लेह-देह चलेला आ अन्त में भीतरवाला मनमउजी जनारदन बाहर वाला जनारदन के बात मान के दम्मी मारके मन का कवनो अन्हारा कोना में दुबुक के सुत जाला। दूनों जनारदन का बीच के ई लड़ाई बराबर होते रहेला।···लगभग रोजे-रोज।

एही से जब बियाह तय हो गइल त जनारदन आपन बेकारी आ घर-परिवार के गरीबी के हाल देख के दुखी आ उदास हो गइले, शादी के विरोध भी कइले····बाप का आगा रोअले-गिड़गिड़इले भी, बाकिर उनकरा भीतरवाला ओह मनमउजी जनारदन का एह बात से खुसिए भइल···ऊ बाहरवाला जनारदन से आँख बचाके हँसत-मुसकात रहल। जनारदन का समझ में ना आवे कि ओह भीतरवाला नासमझ आ मूरुख जनरदनवाँ के कइसे समुझावस कि बच्चू, बियाह के मतलब ओतने ना होखे जतना तूँ समझत बाड़ऽ ! बियाह में भोग-विलास खातिर एगो गुलगुल-मोलायम देह त जरूर मिल जाला बाकिर ओह चीकन-सुघर देह में एगो पेट के गड़हो होला जवना के भरे खातिर अन्न-पानी के जरूरत पड़ेला, ओह देह के ढाँके-तोपे खातिर कपड़ो के जरूरत पड़ेला, आ ई सब चीज पइसा-रुपया से मिलेला, आ पइसा-रुपया तब मिलेला जब आदमी कवनो नोकरी चाहे हाल-रोजिगार करेला। ···आ अबहीं त इहाँ ठन-ठन गोपाल बा। जवना लइकिया से पियार-दुलार करे के बात सोचके अगराइल बाड़ऽ, ओकरा खाये-पीये, पहिरे-ओढ़े के भी कवनो जोगाड़ बा तोहरा पास··· ! अगर ई सब सोचे-समझे के अकिल-गियान तोहरा रहित त बियाह के नाँव सुनके तूहूँ हमरे नियर रोइतऽ, एह

तरे मने-मने अगराके फुटेहरी ना होइतऽ। बुझलऽ बचवा ···।

एहतरे जनारदन के बियाह तय हो गइल आ उनकरा चुप्पी के मतलब उनकर रजामन्दी भी लगा लिहल गइल। एकरा बाद एक ब-एक घर-परिवार के पूरा बातावरने बदल गइल। रोज साँझ के टोलाभर के मेहरारु आँगन में जुटके बियाह के गीत गावे लगली स। नाता-रिश्ता के भउजाई जनारदन के देखके हँसी-मजाक करे लागल लोग। नोनी लागल ढहत-ढिमिलात घर के देवालन के गँगवट-पियरी माटी आ गोबर से लीप-पोत के ओह पर गेर आ चूना से हाथी, घोड़ा, सिपाही आ चिरईं-चुरुंग के चित्र बनावे खातिर टोला-मोहल्ला के लइकियन में हारा-हिसकी लाग गइल रहे।

एक दिन जनारदन के बड़की भउजी उनकरा आगा भोजन के थाली परोसत मुसकुरा के बोलली, 'दू-चार दिन हमरा हाथ के जरल टटाइल रोटी खालीं बबुआ जी, अब त नरम-नरम मोलाएम फुल्का बनावेवाली आवते बाड़ी। अब देखब कि कइसे आगे से छीपा टारके बिना खइले रउआ उठ जाइला···!'

जनारदन अपना बड़की भउजी का ओर अचरज से चिहाके देखते रह गइले। ई हँसी-मजाक के बतकही··· ओठ पर खिलल मुसकान के फूल··· आ सबसे बढ़के दुलार-पियार के सम्बोधन 'बबुआजी'! ना जाने कतना दिन का बाद बड़की भउजी जनारदन से अइसन मीठ बोली बोलले रही। जब ले ऊ कॉलेज में पढ़त रहले आ गाँव के लोग कहत रहे कि पुरोहित जी के बेटा जनरदनवाँ जरूर कवनो बड़का हाकिम बनी, तबले भउजी उनकरा से अइसहीं दुलार-पियार से बोलस। कबो-कबो घटला पर दू-चारगो रुपयो दे देस। बाकिर जबसे जनारदन नोकरी खातिर एने-ओने मारल-मारल फिरे लगले आ घर भर के लोग के आसरा टूटे लागल तब से भउजी के बातो-वेहवार एकदम बदल गइल। साल-डेढ़ साल से त ऊ जनारदन के अपना हाँथ से भोजनो परोसल छोड़ देले रही। जब ऊ खाय खातिर अँगना में अइहें तब भउजी कवनो काम के बहाना बना के एने ओने चल जइहें आ अपना सास से कह दिहें—'अम्मा जी, अपना जज-कलक्टर बेटा के खिया दीं, हमार मुनियाँ रोअत बिया, ओकरा के तनी दूध पियावऽतानी''। हरदम उड़की-भुड़की आ उलटबाँसी बोलेंवाली ऊहे भउजी जब ओह दिन उनकरा के 'बबुआ जी' कहके दुलार से बोलली आ भोजन के थरिया आगे रख के हँसी-ठठ्ठा करे लगली त जनारदन का पहिले के सब बात इयाद पड़े लागल आ आँख डबडबा गइल।

\+ + +

बियाह खूब धूम-धाम से भइल। राम भजन तिवारी अपना छोटका बेटा का बियाह में छाती खोल के खरचा कइले। बरात में हाँथी, घोड़ा, पालकी, बाजा, बिदेसिया नाच —सब गइल। गाँव के लोग का अचरज होखे कि जवन पुरोहित जी दू-चार आना के खइनी बाजार से ना कीनस आ दिन भर एह दुआरी से ओह दुआरी घूमके एक चुटकी खइनी खातिर लोग का आगा हाँथ पसारत फिरेले ····एक एक पइसा दाँत से पकड़ेले आ हरदम लोग का आगे खरची घटला के रोअना रोअत रहेले, ऊहे आज अतना शाह-खरच कइसे बन गइले। केहू कहे कि —"अरे तूँ का जनबऽ, बुढ़वा कंजूसी करके ढेर पइसा बटोरले बा" त दोसराका बोले, "दूनों बेटा कमात बाड़ेसँ, अपना भाई का बियाह के सारा खरचा ऊहे दूनों भाई देलेहसं।" बाकिर गाँव का कुछ लोगन के अनुमान रहे कि तिवारी जी के मँझिला दमाद इन्जीनियर बा, ऊहे सब खरचा दे रहल बा। जनारदनो का ना बुझाय कि बाबूजी अतना रुपया कहाँ से खरचा कर रहल बाड़न। बहुत सोचला का बाद ऊ एही नतीजा पर पहुँचले कि हो सकेला, बाबूजी चुपे-चुपे लड़की का बाप से तीन-चार हजार दहेज लेहले बाड़े आ लोगन से झूठ-मूठ कहत फिरत बाड़े कि एको पइसा दहेज हम ना लेंलीं हँ।

बाकिर बरात लवटला का तिसरे दिने एह सब अँटकर अनुमान आ रहस्य पर से परदा उठ गइल जब गाँव के बनियाँ लछिमी साह सबेरही-सबेरे हैंडनोट के कागज लेके तिवारी बाबा का दुआरी पर पहुँच गइले। तिवारी बाबा दू रुपया सैकड़ा माहवारी सूद का दर पर अढ़ाई हजार रुपया लछिमी साह से लेके बियाह में खरचा कइले रहले।

बड़कू आ मंझिलू बेटा भी एह बियाह का अवसर पर बहरा से आइल रहे लोग। अढ़ाई हजार कर्जा के बात सुनके दूनों भाई अगिया बैताल हो गइल लोग। दूनों भाई एकवटके बाप से सवाल-जबाब करेके शुरू कर देले। थोड़हीं देर में बाप-बेटा के लेहाज छोड़के खूब थुक्कम-फजिहत, गारा-गारी आ धोती-खुँटौअल शुरू हो गइल। पास-पड़ोस के लोग झगड़ा छोड़ावे आ गइल। "ई अढ़ाई हजार के करजा के चुकाई····?"—बड़कू सब लोग का सामने ही बाप से सीधा सवाल कइले, "तूँ त साल छव महीना में सुरधाम पहुँचबऽ; ई फाँसी त हमनिएँ का गला में नू लागी? बिना हमनी से पूछले तूँ करजा काहे लेलऽ? साफ-साफ जबाब द ना त आज हम तोहार अच्छी तरे सभाखन करके छोड़ब··· ! हाथ-गोड़ तूरके तोहरा के लोथ बनाके छोड़ब जे खटिया पर परल-परल हगबऽ····।"

"तूर दे हमार हाथ-गोड़ सुखदेउआ

""...काटके भसिया दे आजु हमरा के गंगाजी में"— तिवारी बाबा निहुरु-किए दउरके अपना बड़का बेटा सुखदेव, का लगे जाके ठाढ़ हो गइले— "उठाव लाठी आ चलाव हमरा मूड़ी पर... बेटा जनमवला के ईहो सुख हमरा मिल जाय।"

कुछ लोग मिलके तिवारी बाबा के खींचके अलगा बइठा दिहल आ सुखदेव के पकड़ के उहाँ से हटावल गइल। तिवारी बाबा अपना ओसारा का चउकी पर बइठ के हफर-हफर हाँफे लगले। तनी देर में जब उनकर हँफनी कम भइल त बोलले, "ई ससुरु दूनों जना ब. रा कमाता लोग, एक पइसा कबहीं हमरा हाथ में भुलाइओ के देले होई लोग...? जे कमाला लोग से अपना-अपना मेहरारु का नाम से मनिआडर करेला लोग। हम बियाह-सादी में करजा ना लीं त कहवाँ से खरचा करीं! पंचलोग तनी एह दूनों जाना से पूछे कि छोट भाई का बियाह में एहलोग का खरचा देवे के चाहीं कि ना....! बियाह-सादी में त खरचा होइबे करेला....हम कवनो अथरबन गड़ले बानी कि निकाल के खरचा करीं! करजा ना लीं त कइसे काम चली.... ।"

ओही दिन साँझ के दूनों बड़कू भाई लोग अपना बाप पर पंचाइत बइठावल। पंचलोग मुदई-मुदाले के बेयान सुनके कुछ देर ले आपस में फुसुर-फुसुर बतियावल आ अन्त में मुखियाजी फैसला सुनदले बेटा-बेटी का बियाह में खर्चा होइबे करेला। अइसन अवसर पर अगर घर में रुपया ना होखे त करजा लिहल कवनो नजाएज ना ह। चूँकि तिवारी बाबा के दू बेटा कमात बा लोग, एहसे ई खरचा ओही लोग के दिहल जाएज बा। बाकिर ऊ लोग नइखे देवे के चाहत एह से जेकरा बियाह वास्ते ई करजा लिआइल बा ओकरे ई सधावे के पड़ी। जनारदन तिवारी ई करजा चाहे कमाके सधावस चाहे अपना हिस्सा के जमीन बेच के सधावस। ईहे पंच के फैसला बा।"

दूनों भाई पंचलोग के जय-जयकार कइल लोग आ पंचाइत खतम हो गइल। मुखियाजी जब चले लगले तब बड़कू आ मँझिल उनकरा पाछा-पाछा उनकरा घर तकले पहुँचावे गइल लोग। सौ रुपया के एगो नोट मुखिया जी का पाकिट में ठूसके बड़कू हाँथ जोड़के बोलले, "बाबूसाहेब, जनरदनऊ के हिस्सा के खेतवा रउए लिखा लीं ना; आज चाहे काल्ह ऊ केहूके त लिखबे करिहें...कमाके ऊ कहाँ से करजा सधइहें।"

"अच्छा, देखल जाई, जब समय आई त ऊहो हो जाई...." मुखियाजी मुसका के बोलले, "बाकिर तिवारी, सबेरे करार त दू सौ के कइले रहलऽ, आ देत बाड़ऽ सौ रुपया, ई त कवनो

बात ना ह ! जाएजन त ऊ करजा तोहरे दूनों भाई के देवे के चाहीं। तोहरे लोगन खातिर हमरा गगा हेले के पड़ल ह ! सौ रुपया अउरु दे जा ना त अबहिऔं कवनो लंगी लगा देब त भोगे लगबऽ लोगे।''

दूनों भाई मुखिया जी के सौ रुपया अउरु देवे के करार कर्के घर लवट आइल लोग।

पंचाइत का दोसरा दिन सबेरही जनारदन आपन कपड़ा-लत्ता एगो झोरा में कसके छव बजिया गाड़ी पकड़े खातिर घर से निकलले त दरवाजा प बइठल बाबूजी के पाँव छू के बोलले ''बाबूजी, रउआ त पुत्र-ऋण से उरिन होके सरग में आपन सीट सुरक्षित करा लेलीं, अब हम साहजी का ऋण से उरिन होखे खातिर परदेस जा रहल बानी। अब ले हम नोकरी खोजत रहलीं हँ, अब हम मजदूरी खोजब। चाहे जइसे होखे, अपना बियाह वाला करजा त हमरा देवहीं के पड़ी···। चाहे रेक्सा चलाईं; चाहे ठेला खींचीं आ कुलीगिरी करीं····जवन काम मिली ऊहे करब···। बहुत लोग ईहे सब कके आपन आ अपना परिवार के पेट चलावत बा, हमहूँ अब ईहे करब···।'' जनारदन का आँख से झर-झर लोर चूए लागल आ उनकर गला बाझ गइल।

''अरे, आज तूँ कइसे घर छोड़के जइबऽ···· !'' —तिवारी बाबा अकचका के बोलले—''पतरा का अनुसार आज रात दस बजे का बाद वर-वधू के मिलन-समागम के सुभ महूरत बा ···· हमरा धरमसास्तर का अनुसार बियाह के एगो ईहो जरूरी अनुष्ठान ह। एकर महातमो कम ना ह। ई अनुष्ठान पूरा कइला का बादे घर छोड़के कहीं बाहर जायके बिधान लिखल बा। आज सोहाग रात के रसम पूरा करल, ओकरा बाद जहाँ जायके होखे, जइहऽ।

''सो····हा·····ग···•रा ऽ ऽ त !'' —जनारदन पागल निअर ठठाके हँसले आ आपन झोरा उठाके बोलले— ''हमार सोहाग रात अब रेलेगाड़ी में होखी, चाहे कवनो टीसन आ धरम-साला में····।'' आ बिना कवनो ओर देखले ऊ सीधे टीसन का रास्ता ओरे दनदनाइल चल देले।

—हिन्दी विभाग,
डी० एम० कालेज, इम्फाल (मणिपुर)



लाउडस्पीकर में कँदोराइल संस्कृति

□ डा० हरिकिशोर पांडेय

ओह दिन जब ड़ाक्टर साहेब का दवाखाना में पहुँचलीं त ऊ बइठल रहस - कपार पर हाथ धइले। हम प्रणाम कइलीं त कहलन —"हे भगवान!" हमरा कुछ गड़बड़ बुझाइल। पुछलीं —"का बात ह डाक्टर साहेब ? तबियत...." लमहर साँस छोड़त ऊ कहलन —"अभी तो ठीक है बाबा किंतु देखता है, भीषण खराब होगा। हम पागल हो जायगा, हमारा रूगी लोग भाग जायगा!" हम भकुआ के ताके लगलीं। ऊ सिगरेट सुनगावत कहलन—"ई लाउडस्पीकर से शुन रहा है आप?....उधर... ऊ शामने, होनुमान जी का मोन्दिर का गेट पर !....उफ... बाबा रे बाबा... ठीक पाँच बजे भोर से दस बजे रात्तिर तक....ननस्टॉप...हम....ठीक बोलता है....नन स्टॉप...फुल भोल्लुम....ऐकदम फुल भोल्लुम....रूगी का पाल्स तो हाथ से देखेगा, किंतु हार्ट का बीट तो कान से न शूनेगा...स्टेथो फेल हम खुद हार्ट पेशेण्ट है बाबा। ई होनुमान जी हमरा हार्ट कोनो रोज फेल करा देगा। हम पोण्डित से बोला। ऊ चिल्ला-चिल्ला के बोला —"घोर कोलियुग, घोर कोलियुग; डाक्टर साहेब पेट का आगा धरम-करम भूल गया। हम डर के भाग आया।"

हमरा हँसी आ गइल। बाकिर बात हँसी के ना रहे। हिन्दी के बँगला भाँज भले गुदगुदवले होय, बात छुरी लेखा मन में धँस गइल। हम उठ गइलीं हाथ जोड़ के। सड़क पर उतरलीं त हरि ॐ शरण जी के 'मैली चादर ओढ़के' खतम हो गइल रहे आ लगले शुरू हो गइल बलेसर भाई के 'चुनरी में लागत बाटे हावा, बलम बेल-बाटम सिया द ना'! तबले एगो कोच लंका-पति का पुष्पक विमान लेखा आके खड़ा हो गइल, चमाचम। ओह में से एगो कड़ी लहरल—'एगो....देले जइह हो करेजऊ' आ गेट खोल के एगो बूढ़ अपना बुढ़ियो के सहारा देत उतरलन। दाँत तर अचके आँकर पड़ गइला से जइसे रोआँ सिहर जाला, हमार मन सिहर गइल।

बर्ट्रेण्ड रसेल कहले बाड़न कि कृषिप्रधान संस्कृति में जब विज्ञान अपना सोरहो कला से आवेला त अचके अइसन कड़ेर गदकी लागेला कि ओह संस्कृति के मूल्य-परम्परा का छिटाके तितिर-बितिर हो जाये के खतरा हो जाला। डाक्टर साहेब एकरे, भोग भोगत रहस। हमनी किहाँ आज ईहे हो रहल बा। बैलगाड़ी खाली एगो सवारिये ना रहे, एगो

मूल्य रहे, जीवन दृष्टि रहे। ओकरा चाल के धीमापन ओह संस्कृति के प्रकृति-चालित भइला के प्रमाण रहे। प्रकृति ठमकत-ठहरत चलेले, कोच लेखा ना भागे। एही से किसान सूतेला पसर के दुआर पर चाहे बथान में में चाहे बधार में; खाला त पलथी मार के, नहाला त, इनार होय, पोखरा होय, नदी होय घण्टा-दू-घण्टा चुभकेला, बतियावेला त बतकूचन के बेरा ढेर बा; गावेला त टानेला जे जवार भर झनझना जाला।

अइसने में आइल सुराज। सुराजो के प्रेरणा पच्छिमे देले रहे; एह से सुराज के साथे ऊ दूगो चीज अउर देलस--प्रजातंत्र आ विज्ञान। प्रजातंत्र के बढ़ावे में विज्ञान के लमहर भूमिका रहल बा। कहल जाला कि बिना शिक्षा के सुबहित फइलवले प्रजातंत्र जीवन दृष्टि ना बन सके। प्रजातंत्र के जमवट ह आदमी-आदमी के बराबरी के भाव। ई तबले ना आ सकी जबले हमनी व्यक्ति के एगो पवित्र सृष्टि मान के आदर ना दीं। बराबरी के ई ज्ञान रेडियो, अखबार, पत्र-पत्रिका, सिनेमा, लाउडस्पीकर. रेल-बस, हवाई जहाज आ अब टेलिविजन का जरिये बहुत तेजी से फइलल बा। ई सब विज्ञाने के देन ह। बाकिर इहाँ एगो बात मने राखे के चाहीं। प्रजातंत्र आ विज्ञान दूनों बड़ा नीमन चीज ह, मगर ई के नइखे जानत कि 'बिना मान अमृत पिये राहु कटायो सीस!' खोराक के ध्यान ना रही त जे केहू खातिर पथ बा, हमरा खातिर बातर हो जाई। जवन लाउडस्पीकर धीमा बोलल बात के मेघनाद का स्वर में सउँसे समाज तक पहुँचा सकेला, ऊ नीमन पहुँचाई त बाउरो पहुँचा दी। सवाल ई बा कि हमनी का नीमन चीज जोर से बोले के बा कि बाउरो जोर से बोले के बा? संस्कृति के लोकप्रिय बनावे के बा कि जे कुछ लोग का मन में आवता ओकरा के संस्कृति मान के प्रचार कर देवे के बा? लोग का जे कुछ मन में आवे ऊ संस्कृति भी होई,ई बात अजगुत बा।

सवाल हो सकेला कि लोक-संस्कृतिओ त कवनो चीज ह। बाकिर ई सवाल करेवाला का लोक-संस्कृति आ लोक वासना के फरक भी बूझ लेवे के चाहीं। लोकसंस्कृति थिराइल मन के गुन ह, ई मन के उमकल ना ह। ई जीभ के पानी ना ह, आँख के पानी ह। 'लोकसंस्कृति' में 'संस्कृति' पद प्रधान होखे के चाहीं। लोकसंस्कृति हमनी किहाँ थिराइल रूप में रहे। एने ऊ कँदोरा रहल बिआ। एकर का कारण बा? लोग अब अपना सोच-बिचार का सहारे नइखे जीअत, लोग अब विज्ञापन का हाँथ के कठपुतरी हो गइल बा। विज्ञापन केकरा हाँथ में बा? विज्ञान का। विज्ञान केकरा हाँथ में बा? व्यापारी का। लोग का खाई का पहिरी का

पढ़ी, का लिखी, ई अब लोग का अपना हाथ में नइखे, विज्ञापन का हाथ में बा। अइसन हालत में संस्कृति व्यापार बन जाले। व्यापारी कवनो चीज के मोल पइसा से करेला, पइसा संस्कृति हो जाला। ईहे वजह बा कि आज लाउड-स्पीकर (विज्ञापन) लोकरुचि के संस्कार नइखे करत, लोकवासना के लटका बजावत चल जाता। एह लटका के बिक्री खूब बा; एह से लोक-वासना संस्कृति मान लिहल जाता। कोई कह सकेला कि विज्ञान अगर संस्कृति के लोकप्रिय ना बनाइत त रामचरितमानस के पाठ लाउडस्पीकर में कइसे आइत! बड़ा भरमावे वाला सवाल बा। एकरा जबाब में सवाल कइल जा सकेला कि डालडा के कंपनी विज्ञापन में महाभारत चाहे रामायण के जवन कथा चित्रित करेले ओह में ओकर मतलब संस्कृति के प्रचार बा, कि डालडा के? बताईं, अगर स्कूटर के नाम हम राणा प्रताप राख दीं त ऊ अकबर पर चढ़ाई कर दीही? बात असल में ई हो गइल बा कि लाउडस्पीकर संस्कृति चाहे विकृति, दूनों का ऊपर हो गइल बा। चीज भावना से अधिका कीमती हो गइल बा। विज्ञान का छू देला भर से कवनो चीज संस्कृति हो जाई ई मान लिहल जाता।

अइसन भइल काहे? अबहीं तक हमनी किहाँ विज्ञान के दिहल चीज जीवन खातिर उपयोगी भा रहे मनोरंजन चाहे विलास के चीज रहल बा। ऊ साधन ना होके साध्य हो गइल बा, सपना के संपत भइल बा, हमनी मुकेश के गावल राम चरित मानस के रेकर्ड सुनत बजावत बानी—एह खातिर ना कि रामायण बिना जी ना सकीं एह खातिर कि लाउड-स्पीकर बिना जी ना सकीं। का बाजत बा, ओतना कीमती नइखे जतना बज-लका कीमती बा। एकर दूगो असर हो रहल बा, दूनो भयानक। पहिला संस्कृति के मोल के गिरावट आ दोसरा, अश्लीलता के मूल्य का रूप में सामा-जिक स्वीकार। संस्कृति अगर मूल्य ह त एकर मर्यादा जरूर होई। मर्यादा देश-काल-पात्र तीनों का हिसाब से होला, बलुक मर्यादा ओकरा के अर्थ देला, गंभीरता देला। अगर रोज-रोज हमनी अँवरा का गाछ तर खाईं त ओकरा के अक्षयनवमी ना कहल जाई। अगर रोज दूनो साँझ छठ के गीत गाईं त ओकर पवित्रता, ओकर महिमा कपूर लेखा उड़ जाई। अगर हरि ॐ शरणजी पाँच बजे भोर से दस बजे रात तक हनुमानचालीसा गावत रहिहन त भूत-प्रेत भी ढिठा जइहन। रउरा सब काम करत रहब, रेकर्ड बाजत रही मगर, अर्थ रउआ ना सुनाई। ऊ रउआ खातिर ओइसहीं हेहर हो जाई जइसे कारखाना का घड़घड़हट में भी मजदूर के फोंफ काटल। रउआ 'मलयागिरि की भिलनी हो जाइब, सब चन्दन लकड़ी

हो जाई, होइये रहल बा। ईहे ह मोल के गिरावट। पंडित जी के 'कलियुग कलियुग' चिल्लाइल ढोंग रहे, लाउड-स्पीकर में उनकर भक्ति ना बाजत रहे उनकर अहंकार बाजत रहे। भक्ति रहित त रोगी के ध्यान राखित, समझित कि दया धर्म का मूल है।

आखिर में रह गइल अश्लीलता के निर्लज्ज प्रचार के सवाल। लाउड-स्पीकर के आवाज जब अजगुत चीज बुझाई त हमनी करब का? जब लइका बोमा में मुँह लगाके बोलेलन स आ आवाज गूँजेला त चकचिहा जालन स अपने आवाज पर। तब उमकके कबहीं बिलाई के बोली, कबहीं कुकुर के, कबहीं बकरी के, बोलके देखेलन स। अउर कुछ ना त खूब जोर से मुँह बिरावेलन स। जवना समाज में अबहीं विज्ञान बोमा लेखा बा ओह में हेलो····टेस्टिंग····टेस्टिंग, अतनो कहे के सुख कम ना बुझाला। अइसन समाज भोर से साँझ तक आजमगढ़-वाली..., लागल झुलनिया के धक्का··· आ सुगा गिरे मुरुछाइ ···· जय गणेश गणनाथ दयानिधि में कवनो भेद ना करी। सब साथे बजाई। चाहे सत्य नारायण जी के कथा होय छठी होय, कीर्त्तन-भजन के बेरा होय, बियाह होय — ऊ सब साथहीं बजाई। हम त एक जगह देखलीं कि सत्यनारायण का कथा में जइसहीं पंडित जी 'सप्तमो अध्याय:' कहके शंख फुँकलन कि आरती का पहिलहीं लाउडस्पीकर बाजल--जिसकी बीबी मोटी····। विसंगति आ बिडम्बना के एह से सटीक अनुभव हमरा एकरा पहिले ना भइल रहे। अइसन समाज गीत नइखे सुनत-गुनत, ऊ खाली ऊँच आवाज चाहत बा। ओकरा गीत ना चाहीं, लाउड-स्पीकर चाहीं। ईहे ओकर मनो-विज्ञान बा। ऊँच आवाज काहे? एह से कि सदियन से ओकर आवाज अतना दब गइल रहे कि एकदम बन्द हो गइल रहे। ऊ खाली ऊँच आवाज पाके खुश बा। ऊ आवाज-आवाज में फरक नइखे कर पवले। हमरा समझ से ई ओकरा मन के छुदम्पना आ ओकरो से उबरे के गलत उपाय बा। अइसने मन रामायण के चउपाई फिल्मी धुन पर गावेला आ कहेला कि ऊ रामायण पाठ के संस्कार कर रहल बा। लोग ई ना पूछे के कोशिश करे कि ओह पाठ में ओकर मन रमत बा कि धुन में ओकरा मन के ओह दृश्य के रस मिलता जवन ऊ सिनेमा का परदा पर देखले रहे। अइसन मन कोच ना, जेट विमाने खरीद लेवे ओह में झुलनिया के धक्के बजाई। ऊ पेशाबखाना का देवाल पर चाहे मालगाड़ी का डिब्बा पर बिहारीलाल के लिख दीही. काहे कि कविता ओकरा खातिर निरोध से अधिका कुछ नइखे रह गइल।

— अंग्रेजी-विभाग
जगदम कालेज, छपरा



गजल

□ रामेश्वर प्रसाद सिनहा

आज मौसम उदास लागत बा।
टीस पँजरी के पास लागत बा।।

कवना दाना प केकर नाँव कहाँ।
सउँसे टोला उपास लागत बा।।

पैंतरा ऊ बदलि रहल बाड़े।
दाव खासो में खास लागत बा।।

सिवा एगो मसान के सगरो।
आदमी जियत लास लागत बा।।

हमके पैमाना कतना छोट मिलल।
कतना बड़हन तरास लागत बा।।

कवनो तूफान ले रहल बा जनम।
बड़ा गुमसुम बतास लागत बा।।

दर्द दिल में हुमाच बा बन्हले।
गजल गावे के तास लागत बा।।

— नेहरू स्मारक उच्च विद्यालय, बक्सर

□

यात्रा-विवरण

घरे से घरहीं

□ विश्वनाथ पांडेय

एगो सपना :

लरिकाईं में अँगना भा ओसरा में खटिया प सूतल-सूतल आसमान में चिरईं के उड़त देखल बड़ा अच्छा लागत रहे। आपन दूनो पाँखि पूरा फैलाके चील्ह जब आसमान में चक्कर काटे त हमरो मन पाँखि लगाके आसमान में तैरे खातिर मचल उठत रहे। मन के ई उड़ान के सिलसिला बहुत देर तक चले अउर एगो सवाल बार-बार कुरेदे— अदिमी चिरईं नियन काहे ना उड़ सके ?

जब कुछ अकिल खुलल आ हम बस्ता लेके मोलबी साहेब के स्कूल में जाय लगलीं तब एक दिन रात खानी सूते का बेरा बाबूजी का मुँह से सुनलीं कि अदिमी त अब साँचहूँ उड़े लागल बा। अदिमी एगो अइसन जहाज बना लेले बा जे हवा में चलेला, एही से ओकर नाँव 'हवाई जहाज' पड़ल बा। आउर एक दिन हवाई जहाज के दरसनो हो गइल।

आम के गाछ का नीचे क्लास लागल रहे—मोलबी साहेब लइका लोग के पहाड़ा रटावत रहन—दूक्का- दू, दू-दूनी चार, दू तिआईं छव······ तले अचानक आसमान में बहुत जोर के आवाज सुनाइ पड़ल। अइसन बुझाइल कि बादर जोर से गरजऽता। लइका लोग पहाड़ा के कड़ी भुला गइल आ ऊपर ताके लागल। मोलबिओ साहेब ऊपर ताके लगलन। एगो बड़हन चिरईं डैना फैलवले, गरजत चलल जात रहे। आँखि का सोझा से ऊ बड़का चिरईं जबले ओझल ना भइल, हमनीका एकटक ओकरा ओर निहारत रहलीं। गजब के चिरई रहे— बड़-बड़ डैना, पाछा के पाँखि धोबिन चिरईं नियन उठल अउर चोंच में नाचत घिरनई। आवाज राकस के आवाज के मात करेवाला।

दिन भर ऊ जहाज मन में नाचत रहल। पहाड़ा आ पाठ त दिमाग का कवनो कोना में लुका गइल, आ रात खानी सुतलीं त सपना में आकास में उड़े लगलीं। खटिया हमार हवाई जहाज बन गइल, अगल-बगल में उड़त चिरइँयन का चारो ओर रुआ के फाहा नियन बदरी तैरत देखाई देवे। बड़ा मजा आइल। हम खुसी में उछले लगलीं, तले धड़ाम से खटिया का नीचे आ गइलीं। पक्का प चोट लागल आ हम चिचि- आय लगलीं। माई हड़बड़ा के उठ गइल आ अपना गोदी में हमार माथा रखके ओकरावे सुहरावे लागल।

माथा में एगो बड़का डिमकी निकल गइल रहे जेकरा में माई करुआ तेल लगाके मालिस कइलस। बड़ी देर का बाद नींद आइल।

ओही घरी से हवाई जहाज प उड़े के एगो तमन्ना मन में रहे। कबो-कबो बइठल-बइठल सोचीं—कइसन लागत होखी हवाई जहाज में उड़ल! लोग ओकरा भीतर कइसे बइठत होखी! धीरे-धीरे उमिर बीते लागल त बुझाइल कि मन के ई साध मनहीं में रह जाई।

सपना साँच भइल :

संजोग से भारत सरकार का ओर से फीजी ब्रॉडकॉस्टिंग कमीशन में सेवा प्रदान करे खातिर गृह-मंत्रालय का ओर से इंटरव्यू के एगो बुलावा आइल। उमेद त ना रहे बाकिर भाग आजमावे खातिर चल गइलीं। घरे लवटके निश्चिन्त होके बइठ गइलीं। अचानक एक दिन एगो चिट्ठी मिलल कि हमार चुनाव हो गइल बा आ हम फीजी जाये के तइयारी करीं। बहुत तरह के भाव एके साथे मन में उमड़े-घुमड़े लागल, जेकरा में खुशी, चिन्ता, उदासी, घबड़ाहट, सबके पुट रहे। बिदेस जाय के खुशी, भाई-बन्धु आ घर-दुआर छोड़े के उदासी, अतना दूर का यात्रा के घबड़ाहट—मिला-जुलाके मन प एगो बड़का बोझा बइठ गइल। लरिकाईं में सुनल कहानी इयाद परल—हुँड़ार आइल, हुँड़ार आइल, आ सचहूँ एक दिन हुँड़ार आ गइल।

पंचतन्त्र का कहानी में एगो श्लोक पढ़ले रहीं जेकरामें बतावल गइल रहे—जब ले भय पास ना आ जाय तबहीं ले भय से डेराय के चाहीं; भय के पास आ गइला प ओकर डटके मुकाबला करे के चाहीं। अब त भय से लड़हीं के रहे—एहसे कमर कसके तइयार हो गइलीं। बाकिर ईहो हमराके खूब खेलवलस, खूब नचवलस—भूख-पियास, सूतल-बइठल सब हराम हो गइल।

22 जुलाई 1979; गया रेलवे स्टेशन के प्लाटफारम नम्बर एक। भोर होखे में दू घड़ी बाकी होई—यानी रात के तीन बजत रहे। घर-परिवार, ससुरार के लोग आँखि में सनेह के लोर लेले, बम्बई मेल के आवे के इंतजार करत रहे। हमार ससुरजी (स्व० पंडित हंस-कुमार तिवारी) बार बार आपन नेह बरसावत रहीं। उहाँका बार-बार आपन आँसू छिपा लेत रहीं बाकिर हिरदय के भाव परगट होइए जात रहे। ई का पता रहे कि हमनीके उहाँके अन्तिम दरसन रहे! बेटी, दामाद अउर नाती लोग से बिछुड़ला के कसक मन के सालत रहे। गाड़ी समय प आइल आ समय प खुल

गइल। खुलल गाड़ी से हमनीका बहुत देर तक झाँकत रहलीं जा अउर हाँथ हिला-हिलाके सब केहू से बिदा लेत रहलीं जा। आजो उहाँके चेहरा के उदासी जा हिलत हाँथ आँखि का आगा उभर जाला।

बम्बई से सिंगापुर :

हमनीका बम्बई पहुँचलीं त मौसम गीला रहे। बम्बई छोड़े तक अइसन बरसात होत रहल कि घर के बाहर मुड़िओ निकालल मुश्किल रहे। बोरियत दूर करे में फिल्म-निदेशक भाई गिरीशरंजन आ मित्रवर मधु सिनहा जी अपना ओर से कुछुओ कसर ना उठा राखल लोग।

छलाँग मारत दिन बीत गइल। दोसरा दिन ठीक समय प हमनीका शांताक्रूज हवाई अड्डा आ गइलीं जा। आज तक पैदल-गाड़ी, बैलगाड़ी, हवागाड़ी प यात्रा करेके अनुभव रहे। एहिजा त अपना टिकट के जाँच करवाईं, भारतीय मुद्रा के बदल-वाईं, अपन माल-असबाब तउलवाके हवाई जहाज का अधिकारी लोग के जिम्मा दीहीं—फेनु अन्दर दाखिल होईं। ओहिजा राउर पासपोर्ट चेक होई, राउर हाथ के थैली वगैरह के जाँच होई, कस्टम विभाग के अधिकारी लोग के तरह-तरह के सवालन के जबाब देवे के होई, तब कहीं जाके रउराके एह काबिल समझल जाई कि रउरा हवाई जहाज प बइठ सकीला।

लइका लोग के त आनन्द आवत रहे अउर एह डाल प से ओह डाल प कूदत-कूदत हमार पसीना छूटत रहे। आखिरी सीढ़ी प जाके सीट नम्बर दीहल गइल अउर ई सुझाव दिहल गइल कि हमनीं का यात्री-विश्राम-कक्ष में प्रतीक्षा करीं जा। विमान के दिन के बारह बजे उडे के रहे—बइठल-बइठल देह दुखाय लगल। आउर आगे के यात्रा में व्यवधान आवे के आशंका से मन घबड़ाय लागल।

साँझि के साढ़े चार बजे लाउड स्पीकर प एगो घोषणा सुनाई पड़ल—"बम्बई से मद्रास, सिंगापुर पर्थ होते हुए सिडनी जाने वाला एयर इण्डिया का 412 नम्बर का विमान कुछ ही देर में उड़ान भरेगा। इस विमान से यात्रा करनेवाले यात्री अब विमान पर सवार हो सकते हैं।"

ऊबके बइठल यात्री लोग में चेतना आ गइल आउर पूरा विश्राम-कक्ष में खलबली मच गइल। सब लोग अपन-अपन हाँथ वाला बैग उठा लेलन अउर गेट नम्बर नौ का ओर लपके लगलन।

विमान से सटल सीढ़ी पर चढ़के हमनीं का जसहीं आपन चरन एयर इंडिया के जम्बो जेट 'सम्राट् चन्द्रगुप्त' का भीतर रखलीं त आँखि चोन्हिया गइल। दरवाजा प ठाढ़ विमान परिचारिका मुस्कुराके

स्वागत कइली अउर हमनीके सीट का ओर इशारा क दिहली।

विमान का आगे वाला भाग में विमान-चालक के जगह अउर सब तरह के मशीन रहे। ओकरा पीछे प्रथम श्रेणी के यात्री लोग के बइठे के स्थान अउर ओकरा पीछे भोजन पेय आदि रखे के छोटहन घर; आउर ओकरा पीछे सेकेण्ड क्लास के यात्री लोग के बइठे के स्थान रहे। सामान्य यात्री लोग एही क्लास में यात्रा करेला। विमान आगे से नुकीला अउर पीछे से नुकीला बाकिर बीच में ओकर पेट फुलल रहे। विमान का दाहिना किनारा प तीन-तीन गो यात्री लोगन के बइठेके सीट अउर बीच में पाँच गो कुर्सी। कुर्सी पूरा गद्दीदार रहे। बायाँ हाँथ का ओर एगो अइसन स्विच लागल रहे कि ओकराके अगर दाब दीहीं त पीठवाला भाग पीछे का ओर चल जाई अउर रउआ पैर फैलाके आराम कर सकीला। दहिना हाँथ का ओर एगो स्विच दबाके रउआ जरूरत पड़ला पर विमान-परिचारिका के बोला सकीला। ओकरासे सटले एगो आउरो स्विच, जेकरा माध्यम से रउआ संगीत के कार्यक्रम हेडफोन पर सुन सकीला।

लइका लोग अतने देर में अपन करीगरी शुरु कर देल लोग। कबहीं ऊ लोग बाहर झाँके त कबहीं भीतर के कार्यकलापन के कौतूहल से देखे।

आधा घंटा बीतल होई कि विमान के दरवाजा बन्द क दिहल गइल अउर उद्घोषणा के नारी-कंठ सुनाई पड़ल—पहिले हिन्दी में फेर अँगरेजी में—"कैप्टन वर्मा और उनके सहयोगियों की ओर से 'सम्राट् चन्द्रगुप्त' पर हम आपका स्वागत करते हैं। कुछ ही देर में हम उड़ान भरनेवाले हैं। हमारी यात्रा मद्रास, सिंगापुर, पर्थ होते हुए सिडनी तक की होगी। मद्रास तक की यात्रा लगभग एक घंटे में पूरी की जायगी। यात्रियों से अनुरोध है कि अपनी पेटी बाँध लें और धूम्रपान न करें।"

सम्राट् चन्द्रगुप्त अपना समय से करीब छव घंटा देर से उड़ल। ओह घरी, बम्बई का घड़ी में साँझि के साढ़े छव बजत रहे। विमान अब धरती छोड़ देले रहे अउर आसमान में पँवरे लागल रहे।

जसहीं विमान के लाग माटी से छूटल, ओसहीं अपना धरती से बिछोह के कसक जिया के टीसे लागल। बिदेस जाय के तइयारी के उलझन अउर भाग-दउड़ में ई सोचे के मौके ना मिलल रहे कि हम अपना धरती, अपना मातृभूमि से अतना दूर जात बानीं—पीछे छूटल गाँव, घर, महल्ला, टोला, शहर, बाजार, रास्ता, दोस्त, भाई, रिश्ता-नाता, परिवार—सबके चित्र आँखि का भीतरी परदा प घूमे लागल। अजीब एहसास मन के कुरेदे लागल रहे।

कल्पना का डोर प सवार हमार मन के पतंग तैरत रहे कि एगा झटका से क्रम टूट गइल—हम देखलीं कि विमान परिचारिका आपन सहज मुसकान बिखेरत हमरा सामने ठाढ़ बारी। उनकरा हाथ में शरबत के गिलास रहे। पहिले त हम उनकर चेहरा निहारत रहलीं—बाद में हमार हाथ अपने आप गिलास का ओर चल गइल।

विमान का रहे—आसमान में उड़त एगो महल रहे—सजल अउर सँवरल। शायद सम्राट् चन्द्रगुप्त के सजावटो एह सजावट का सामने फीका पड़ जाइत।

विमान थोड़का देर खातिर मद्रास हवाई अड्डा प उतरल—कुछ यात्री लोग सवार भइल। दू-एक जाना उतरबो कइल लोग।

मद्रास से हवाई जहाज रवाना हो चुकल रहे। अब ऊ समुद्र का ऊपर से उड़ान भरत रहे। बाहर अन्हरिया का सिवा कुछुओ ना दिखाई पड़त रहे। यात्री लोग खाना समाप्त कके झपकी लेवे लागल रहे। अचानक एगो उद्घोषणा से नींन टूटल—"हमारा विमान कुछ ही देर में सिंगापुर के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने वाला है—यात्रीगण अपनी अपनी पेटी बाँध लें और धूम्रपान न न करें।" हाथ के घड़ी प अचानक नजर चल गइल। रात के बारह बज के पनरह मिनिट होखत रहे। जहाज ओहिजा तेल-पानी लेवेला रुकल रहे—एहे से यात्रीलोग के आदेश दिहल गइल कि सब लोग विमान प बइठल रहो। बाहर खिड़की से झाँक के देखलीं त हवाई अड्डा के सफाई, रोशनी आउर जगमगाहट से मन मुग्ध हो गइल—हवाई अड्डा के विशाल भवन के ऊपर लागल घड़ी में रात के डेढ़ बजत रहे। मन में एकेगो भाव आइल—हमनीं का देश के हवाई अड्डा भा स्टेशन अतना साफ काहे ना रहे? काश! हमनींका अच्छाइयो के नकल कर पवतीं?

सिंगापुर से पर्थ :

एक घंटा का बाद हवाई जहाज फेनू हवा से बात करे लागल। कुछ ठंढा बुझाइल त सीट का ऊपर बनल सन्दूक में से कम्बल निकाल लिहलीं अउर तानके सुत गइलीं। श्रीमती जी त पहिलहीं से आराम के मुद्रा अपना लेले रही। लइको लोग देखा-देखी कम्बल ओढ़ लेलस लोग। खिड़की का बाहर अन्हरिया का सिवाय कुछुओ देखाई ना पड़त रहे। कुछ घंटा का बाद हवाई जहाज के यात्री लोग चिरई नियन खोंता से निकलके पंख फड़फड़ावे लागल। भोर होत रहे। हवाई जहाज का डैना प सूरुज के तेज रोशनी चमके लागल रहे। जहाज का नीचे बिखरल बदरी प सूरुज के किरन के बान रंगन के खेल खेलत रहे।

अजीब छटा रहे। सभ यात्री लोग बाहर झाँक-झाँकके ई अलौकिक दृश्य निहारत रहे। एही बीच एगो घोषणा कान में सुनाई पड़ल—"हमारा विमान सैंतीस हजार फीट की ऊँचाई से उड़ रहा है। लगभग एक घंटे में हम पर्थ पहुँचने वाले हैं। पर्थ में हम दो घंटे के लिये रुकेंगे। यात्रीगण से अनु-रोध है कि जहाज के रुकने पर विश्राम कक्ष में चले जायेंगे ताकि इसकी सफाई में सुविधा हो। धन्यवाद।" जइसे-जइसे जहाज पूरुब का ओर बढ़त रहे, समय आगे का ओर खिस-कत जात रहे। पर्थ के समय का मोताविक 'सम्राट चन्द्रगुप्त' के लाग भोर के साढ़े सात बजे के करीब पर्थ का माटी से भइल। हमनी का थोड़िका देर सीट प बइठल रहलीं जा—थोड़िका देर में सीढ़ी हवाई जहाज का दरवाजा से लागल अउर ऑस्ट्रेलिया स्वास्थ्य-विभाग के एगो दल अपना हाँथ में दवाई के पिचकारी लेले विमान का भीतर आ गइल अउर पूरा विमान के भीतर एगो दवा के छिड़काव कइ-लस। ई एहसे कइल गइल कि कवनो यात्री कवनो रोग के छूत ओहिजा के धरती प ना रोप सको। थोड़िका देर में ई कांड समाप्त भइल अउर यात्री लोग उतरे लागल। बाहर टीप-टाप पानी पड़त रहे।

विदेश का माटी प:

धीरे-धीरे हमनी, सीढ़ी से उतर गइलीं जा अउर विदेश का माटी प अपना चरन रखे के पहिलका सुख मिलल। सब यात्री लोग के एक-एगो रंगीन छाता हाँथ में दिहल गइल। छाता के कपड़ा कई रंग के, अउर ओकर आकार भारत में प्रचलित सामान्य छाता से बहुत बड़ रहे।

हवाई अड्डा के विश्राम-कक्ष सुन्दर रहे। यात्री लोग समय बितावे खातिर गप-सप में लाग गइल अउर कुछ यात्री लोग अपना-अपना पसन्द के पेय के गिलास हाँथ में ले लेलन।

दू घंटा का बाद हवाई जहाज फेनु हवा से बात करे लागल। हवाई जहाज ऑस्ट्रेलिया का बीच के रेगि-स्तानी इलाका से उड़त रहे। चार घंटा तक विमान हवा में पँवरत रहल अउर ई चार घंटा बीते में समय ना लागल। उद्घोषणा के स्वर सुनाई पड़ल—"हम कुछही देर में सिडनी पहुँ-चने वाले हैं। यात्रीगण अपनी-अपनी पेटी बाँध लें......धन्यवाद।" यात्री लोग आपन-आपन सामान सरिआवे लागल अउर मेहरारू लोग आपन चेहरा सँवारे लागल। सेंट अउर पाउडर से पूरा हवाई जहाज गमगमाय लागल। आँखि खिड़की का बाहर चल गइल। समुद्र के नीलापन क्षितिज के छोर तक फइलल रहे। ओकरा विशालता का आगे माथा अपने-आप झुक गइल। एहीसे ओकर नाम सार्थक बा—

प्रशान्त। प्रशान्त के गहिराई अउर विशालता में ईश्वर के दिव्य रूप के दरसन हो सकेला। समुद्र कहीं-कहीं कट-छँटके जमीन का पेट में घुस गइल रहे—ओकरा किनारे-किनारे ऊँच-ऊँच मकानो के पाँति अउर ओकरा बीच में दउरत सड़क, आउर ओपर दउरत रंग-विरंगी गाड़ी—बुझात रहे कि चींटी रेंगत बाड़ी स।

हमनीका जब ओहिजा के हवाई अड्डा का भीतर अइलीं जा त देखलीं कि ओहिजा के घड़ी में साँझिके साढ़े चार बजत रहे।

एह विमान का देर से चहुँपला का कारन फीजी जायवाला विमान जा चुकल रहे। मन में धुकधुकी होखे लागल कि अब का होई। सोचे लगलीं कि अब का कइल जाव। अचानक साड़ीमें सजल एगो श्रीमतीजी प्रकट भइली। एह संकट का घड़ी में उनकराके देखके मन बड़ा हरखित भइल। ऊ मुसकुराके हमनीके स्वागत कइली अउर बतवली कि हमनी के फीजी जाय के इन्तजाम काल्ह सुबह 'क्वान्टास' विमान सेवा से कइल गइल बा अउर आज राति खा ठहरे के इन्तजाम एगो स्थानीय होटल में कइल गइलबा। परदेस में ठहरे के ठाँव मिल जाव त समझीं कि डूबत खातिर समुद्र में नाव मिल गइल। सब बात समुझाके देवीजी अन्तरधेयान हो गइली।

यात्रा अन्तिम पड़ाव का ओर

दोसरा दिन फटाफट तइयार होके हमनीका हवाई अड्डा पहुँच गइलीं जा अउर अन्तिम पड़ाव के यात्रा आरम्भ भइल। विमान में जादातर सैलानी लोग रहे जे फीजी में छुट्टी बितावे जात रहे। फीजी के प्रशान्त के स्वर्ग कहल जाला अउर अस्ट्रेलिया, न्युजीलैंड के काफी यात्री लोग ओहिजा के गरमी म आपन देह गरम करे ओहिजा जाला।

जहाज सताइस-अठाइस हजार फीट का ऊँचाई से उड़त रहे। कुछ देर का बाद सीट का सामने लागल परदा प फिलम देखावल जाय लागल। फिलमो फीजी के बारे में रहे। लोग उत्सुकता से देखत रहे। हमनीका त अपनाके ओकरामें डुबा देले रहींजा काहेकि आपन माटी छोड़के एही माटी में कुछ दिन, सुख-दुख के घड़ी काटे के रहे। समय कइसे बीत गइल, कुछ पता ना चलल। तीन घंटा के उड़ान का बाद जमीन प हरियरी देखाई पड़े लागल। जहाज फीजी का अन्तरराष्टीय हवाई अड्डा प उतर गइल। हवाई अड्डा के नाम रहे नांदी जेकरा के ओहिजा के लोग नादी कहेला।

ओढ़उल का देश में :

यात्री लोग आपन-आपन पासपोर्ट आउर कागज-पत्तर लेके जाँच

करवावे खातिर लाइन में लाग गइल ! सामने चार-पाँच गो काउंटर बनल रहे अउर सब काउटर का सिरा प एक-एगो आधकारी बइठल रहन। उनकरा लोग के रूपरंग आ शरीर के बनावट जतना हमनीका अदिमी देखले रहीं ओकरासे अलग रहे। भारी-भरकम देह—एकदम करिया ना बाकिर ओकरे छाया के रंग। माथा के बार झाबर-झाबर, बुझाय कि बड़का चिरई के खोता माथा प धइल बा। चौड़ा मुँह आ उँचाई छव फुट के करीब। पहिनावा भी उनकरा लोग के अजवे रहे। पैंट का जगहा प ऊ लोग एगो लुँगी नियन वस्त्र पेन्हले रहे। बाद मे पता चलल कि एकराके इहाँ के लोग 'सुलू' कहेला। ऊपर फूलदार बुशर्ट, जेकरामें ओड़हुल का फूल के रंग-बिरंगा छाप रहे। काउंटर प पहुँचते ऊ लोग मुसकुरा के स्वागत कइल—बड़ा अच्छा लागल। बड़ा अपनापन रहे एह मुसकुराहट मे।

हमनींका ओही दिन दोसरा जहाज से फीजी का राजधानी सूवा खातिर प्रस्थान करे के रहे। बाहर निकलके हम सोचे लगलीं कि अब केने जाईं कि एगो स्थानीय फीजियन महिला सामने से अइली अउर अँगरेजी में पुछली—'क्या आप श्री पांडेय हैं?'' हमरा आश्चर्य भइल कि हमार नाम इनकरा कइसे मालूम बा ? ऊ आपन परिचय दिहली कि स्थानीय एयर इंडिया में एगो कर्मचारी हईं। ऊ वतबली कि हमनीं का आज रात नांदी में बितावे के पड़ी। हमनीका फीजी जाय के इन्तजाम काल्ह भइल बा—बाकिर सूचना खातिर एयर इंडिया का दफ्तर में जाय के पड़ी। एयर इंडिया के दफ्तर हवाई अड्डा के कक्ष में रहे—दू मिनिट में हमनीका हवाई अड्डा के दफ्तर में दाखिल हो गइलीं जा। ओहिजा एगो सज्जन कुर्सी पर विराजमान रहन—चौड़ा मुँह, चौड़ा सीना, केस सँवरल। तपाक से कुर्सी प से उठके स्वागत कइलन अउर आपन परिचय देत आपन दुनो हाँथ हमरा ओर बढ़ा देलन आ कहलन—'मेरा नाम शर्मा'—शर्मा सुनते शरीर में रोमांच हो गइल। हमार हाथ अपने आप अभिवादन में उठ गइल। आगे का यात्रा के कड़ी हम भुला गइलीं अउर बातचीत के सिलसिला फीजी में सौ साल पहिले आइल भारतवसियन का ओर मुड़ गइल। शर्मा जी के आजा उत्तर प्रदेश के पच्छिमी इलाका से एहिजा आइल रहन।

थोड़िकी देर के बाद हमनीका गाड़ी में बइठ गइलीं जा अउर गाड़ी होटल का ओर चल देलस। गाड़ी में लागल रेडियो खोल दिहल

गइल—एगो हिन्दी फिलमी गाना के स्वर सुनाई देवे लागल। गाना खतम होते एगो नारी - कंठ सुनाई पड़ल—'अभी आप फिलम 'अदाज' में लता मंगेशकर को सुन रहे थे और अब सुनिये मो० रफी की आवाज में यह गाना।" बुझाइल हम फीजी में ना, पटना में बानी। विचारधारा के कड़ी तब टूटल जब गाड़ी होटल का फाटक में घुसे लागल।

होटल के स्वागत-कक्ष में फेनु ओही मुसकान के दरसन भइल। बुझइला मुसकान एहिजा के प्रकृति में बा—लोग के अंग-अंग में समाइल बा आउर ई लोग दिल खोलके ओकराके लुटा रहल बा—फूल के पराग जइसन।

होटल के कमरा नम्बर तीन सौ चउदह—सामान सरिअवला का बाद श्रीमतीजी चाय के पानी खउलावे लगली। लइका लोग बिछउना प धड़ाम से पड़ गइल। हम कमरा के आगे-पीछे के स्थिति के अन्दाज लेवे खातिर पीछेवाला बरामदा में आ गइलीं—पीछे मैदान अउर ओकरा प बाँस के झुरमुट—बीच-बीच में झाँकत आम के दू-चार गो बिच्छि। मन में रोमांच आउर गुदगुदी के भाव एके साथे दउड़ गइल—बुझाइल कि हम अपना गाँव के बगीचा में पहुँच गइलीं—ऊहे बगीचा जेकरामें हम अपना सँघतिया लोग का साथे कबड्डी अउर अंटा खेलले रहीं—ऊहे बगीचा जेकरा गछुली प चढ़के ओकरा खोंढ़र में हम मैना अउर पडुकी के बच्चा खोजले रहीं; ऊहे बगीचा जेकरा में बइसाख जेठ का दुपहरिया में मारल-फिरत अच्छा लागत रहे; ऊहे बगीचा जेकरामें पूस-माघ के धूप-छाँह में गुल्ली-डडा अउर अंटा के खेल दिन भर चले अउर बरसात में भींगके दाँत कटकटावत कवनो गाछ में पीठ अड़ाके ठाढ़ भइल बड़ा अच्छा लागत रहे।

रात, अउर फेन बिहान होखे में देर ना लागल। चिरई-चुरूंग के कलरव सुनाई पड़े लागल। बरामदा का रेलिंग प एगो मैना के जोड़ा कबो पाँखि फड़फड़ावो त कबो चें चें आवाज लगावे—जइसे कहत होखे भोर भ गइल—सब लोग जागऽ। बाहर गुलाबी ठंढा रहे।

हम बाहर के दृश्य के आँखि का भीतर समेटे खातिर नीचे उतरके मैदान में आ गइलीं। थोड़िका देर में देखलीं कि एगो महिला चाय-चू के सामान लेले स्वागत-कक्ष का ओर से आवत बाड़ी। उनकर पहिरावा-ओढ़ावा नाक-नकसा से बुझाइल कि ऊ जरूर भारतीय वंश के बाड़ी। हम आपन उत्सुकता ना रोक सकलीं अउर उनकर परिचय पूछे के पहिले आपन परिचय दे दिहली। उनकरा चेहरा प मुसकुराहट तैर गइल—आपन नाँव

ऊ फातिमा बतवली। उनकर आजा भारत के कवन जगहा से आइल रहन, एकर पता उनकरा ना रहे बाकिर उनकर बातचीत का लजा से पता चलल कि उनकर सोत जरूर भोजपुर का माटी में कहीं होई।

होटल के भोजनालय में 'बम्बई करी' (मिलल-जुलल तरकारी) अउर भात अउर दाल के सूप (झोर) खाके हमनीका हवाई अड्डा आ गइलीं जा। शर्माजी इन्तजाम अउर बिदाई खातिर उपस्थित रहन।

आउर फेनु हमनीं का हवाई जहाज का पंख प सवार हो गइलीं जा—नीचे झांक के देखलीं—पहाड़ियन के ऊँच-खाल चोटी अउर ऊपर के हरियाली दूर-दूर तक फैलल रहे। बीच-बीच में नदी के दुधिया धार—कहीं टेढ़ अउर कहीं सीधा बुझाय कि करिया सिलेट प खरी से कवनो चित्रकार सोझ-टेढ़ लकीर खिंचले बा। कालिदास के मेघदूत शायद एही राह से आपन यात्रा कइले रहन!

सूवा, फीजी के राजधानी के हवाई अड्डा। सामने नजर गइल त बुझाइल कि केहू दूर से हाँथ हिला-हिलाके स्वागत करत बा। हवाई अड्डा का भीतर आवते एगो परिचित चेहरा। उहाँके तपाक से मिललीं अउर हमनी का गला मिललीं जा।

इहाँ के रहीं फीजी ब्राडकॉस्टिंग कमीशन के उपमहाप्रबन्धक। आवे का कुछ दिन पहिले भारत में इहाँसे मुलाकात भइल रहे। इहाँके परिचय करवलीं—"इनसे मिलिये—ये हैं डॉ० राजेन्द्र सिंह कुशवाहा, भारतीय हाइ कमीशन में हिन्दी-अधिकारी, और आप हैं श्री राधेश्याम शर्मा। आप भी भारतीय हाइ कमीशन में हैं।"

रेवा आउर गंगा :

सामान समेटके गाड़ी प रखल गइल अउर गाड़ी सूवा शहर का ओर चलल—शहर करीब बारह मील दूर होई। गाड़ी शहरी इलाका पार कके एगो नदी का पुल प चढ़ल। दिवाकर जी कहलन—'ई रेवा नदी ह; एहिजा के गंगा।' रेवा नाम में अपने बहुत भारतीयता बा—गंगा का संजोग से मन में पवित्रता के लहर हिलकोरा लेवे लागल। मन में एगो लोकगीत के पाँति अचानक कौंध गइल—'गंगा तोहरे हो लहरिया मोरा मनवाँ भावे ना……।"

कल्पना के पाँखि प सवार मन दउरे लागल—एही रेवा नदी का धार में नहाके गंगा का तट से आइल भारतवंशी लोग—'हर-हर गंगे' कहके अपना मन के शान्ति दिहले होई। एकरे तट प खड़ा होके, अपना आँखि में आँसू लेले, पिया से बिछुड़ल कवनो नायिका कहले होई

'हे गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो, पिया से कइ द मिलनवाँ; हाय राम'। पता ना, उनकर मन के साध पूरा भइल कि ना—बाकी उनकर आँखि के आँसू नदी का धार में मिलके प्रशान्त का अथाह जल में जरूर समा गइल होखी।

हम मने-मने अपना गाँवें पहुँच गइलीं अउर हमार मन गंगा का पानी में डुबकी लगावे लागल—जहाँ तीन-तीन में चार-चार घंटा हम अपन सँघतिया लोग का साथे पँवरीं अउर धोती के दूनो छोर पकड़के मछरी मारीं जहाँ ऊजर-ऊजर रेती प चाँदनी रात में पटाइल रहे में एगो अजबे आनन्द आवत रहे। गाँव के कवनो दलान प से पंडितजी का मुँह से जोर-जोर से पाठ कइल गइल रामायण के चौपाई कान में सुधारस बरिसावत रहे—

कृपासिंधु बोले मुसकाई
सोई करू तेहिं तव नाव न जाई
जासु नाम सुमिरत एक बारा,
उतरहिं नर भवसिंधु अपारा

मन में बुझाइल कि भगवान के नाव चलत-चलत रेवा नदी का तट प आके ठाढ़ हो गइल बा अउर केवट उनका चरन के धूरी अपना माथा प चढ़ाके बिनती करत बाड़न कि हे प्रभु ! हमरा उतराई ना चाहीं; अपने बचन देके जाईं कि लवटती बेरा रउरा एही घाटे होके जाइब। अउर राम का आवे के प्रतीक्षा में आजो रेवा नदी के तट प आपन श्रद्धा के नाव लेले भारत-भूमि से आइल भारतीय सन्तान ठाढ़ बा—शायद भगवान लवटती बेरा एनहीं से जइहें!

सूवा शहर का बहरी मुहाना प गाड़ी पहुँच गइल। एगो साइनबोर्ड प लिखल रहे—'सूवा शहर आपका स्वागत करता है'। आबादी घना भइल जात रहे। आगे अइला प दिवाकरजी बतवलीं—एह मोहल्ला के नाम सामाबुला ह। बायाँ तरफ एगो मस्जिद दिखाई पड़ल। थोड़िके दूर गइला प सड़क का दाहिना ओर गुरुद्वारा के दरसन भइल। एगो छोट टील्हा प बनल गुरुद्वारा का बाहर सतश्री अकाल के केसरिया झंडा शान से लहरात रहे।

ओकरे सामने से दिवाकरजी गाड़ी के बाँयें मोड़ लिहलीं। एह रोड का पछिमी किनारा प शिवमन्दिर के दरसन भइल। माथा अपने आप श्रद्धा से झुक गइल—मन्दिर, मस्जिद अउर गुरूद्वारा—भारतीय संस्कृति के संगम।

थोड़िका आगे जाके गाड़ी दाहिना सड़क प मुड़ल-ठीक कोना प ऊँचाई प एगो बड़का मकान देखाई पड़ल। दिवाकरजी बतवलीं—ई 'इण्डियन हाइ स्कूल ह। बुझाइल कि हम त अपने शहर में चक्कर लगावत बानी—सब

नाम भारतीय, हर कोना में भारत के चित्र।

तनिका देर का बाद गाड़ी एगो बड़का फाटक में ढुकल। सामने लिखल रहे 'ट्रॉपिक टावर मॉटेल'। हमनी के ठहरे के अस्थायी इन्तजाम एकरे में कइल गइल रहे। होटल अउर मोटल में इहे फरक होखेला कि एहिजा चूल्हा-चक्की अउर बरतन के सारा इन्तजाम मिली--रउआ बनाईं आउर खायीं। तुरंते सारा दृश्य बदल गइल—बुझाइल कि हम विदेश में बानी। सब कुछ में अंगरेजी अउर अँगरेजियत के छाप।

लड़िका लोग अउर श्रीमतीजी सामान सहजे में लाग गइल। कुशवाहाजी रात में भोजन के न्योता देके चल गइलन। दिवाकरजी आवश्यक जानकारी आउर सलाह देके, भोर में फेन मिलेके वादा कके, विदा ले लेनी।

रात के भोजन खातिर कुशवाहा जी ले गइलीं। लवटत-लवटत रात के एगारह बज गइल। चारू ओर निठाह शान्ति रहे—रास्ता में एगो मकान में से आरती के स्वर कान में पड़ल। ढोल प थाप अउर करताल का बीचे आरती के स्वर उभरत रहे—

'आरती श्री रामायण जी की
कीरति कलित ललित सिय पी की

रातभर ई आरती के पंक्ति माथा में चक्कर काटत रहल अउर बार-बार लागे कि गाँव का ठाकुरबारी में गाँव भर के लोग श्रद्धा से झूम-झूम के ई आरती के पंक्ति दोहरा रहल बा—

आरती श्री रामायण जी की।

हम सोचे लगलीं हम त घरे से चलल रहीं अउर सोरह हजार किलोमीटर के यात्रा का बाद कइसे हम फेनु घरहीं चहुँच गइलीं ?



कब, कहवाँ, केकर, का

□ बजरंग वर्मा

भोजपुरी भाषा आ साहित्य पर शोध करेवाला का सामने आज सबसे बड़का अझुरहट ई बा जे भोजपुरी-क्षेत्र में अबहीं ले कवनो अइसन पुस्तकालय नइखे जहवाँ भोजपुरी-भाषा में लिखल आ छपल साहित्य आ पत्र-पत्रिका एक जगहा जोगावल गइल होखे। एकरा चलते ओह लोग के पचासों जगहा दउरे-धूपे के पड़ जाता, आ ओहू पर कवनो काम के चीज नइखे मिल पावत। भोजपुरी अकादमी का एह ओर सोच के, जतना जल्दी होखे लाग जाय के चाहीं, काहे कि शोध के सुविधा ना मिली त भोजपुरी के जस दुनियाँ भर में कइसे पसरी ?

शोध का दुनिया में पत्रिकन के स्थान जगजाहिर बा। कवना पत्रिका में कब, कहवाँ, केकर, का छपल बा, ई जाने खातिर कबो-कबो शोध करेवाला लोग के पत्र-पत्रिकन के कुल्हि अंकन के सभ पन्ना उलटे के पड़ जाला आ ओकरा बादो काम के कुछुओ हाँथ ना लागे। अइसन हालत में, अपना मेहनत के फल ना निकलत देखिके ऊ लोग हतास होके बइठ जाला।

भोजपुरी भासा साहित्य में शोध करेवाला लोग कवनो पत्रिका के कवन-कवन अंक उलटो ? जे अंक कौनो खास संग्रहालय में नइखे ओकरा खातिर एने-ओने परेसान भइल, दउरल- धूपल जरूरी बा कि ना ? एह सब बातन के मन में राखत हम 'भोजपुरी अकादमी-पत्रिका' के अबतक के कुल्हि अंकन के विषयवार-फेहरिस्त तइयार कइले बानी, जे दिहल जा रहल बा –एह फेहरिस्त में पाठक के एह पत्रिका के जनम से आगा बढ़ेके एगो इतिहासो देखे के मिली आ ईहो मालूम होई जे एकर रूप कब का रहल आ कब के एकर सम्पादक रहल।

एह पत्रिका के पहिलका अंक भोजपुरी-प्राण स्व० श्री केदार पाण्डेयजी के संरक्षण में, दिसम्बर १९७८ ई० में निकलल रहे। ओह घरी ओकर सरूप 'मासिक' रहे। प्रधान-सम्पादक रहलन अकादमी के पहिलका आ वर्त्तमान निदेसक पं० हवलदार तिरपाठी 'सहृदय' आ सहायक सम्पादक रहलन श्री भैरवनाथ पाण्डेय।

दिसम्बर १९७९ ई० में भैरवजी के एह पत्रिका से नाता टूट गइल आ मार्च, १९८१ ई० से एकर सरूपो तिमाही हो गइल। जब ले एकर रूप मासिक रहे, तबले एकर प्रकाशनो रुक-रुक के होत रहल। बरिस-१ में एकर कुल सातगो अंक निकलल, ओहू में छठवां आ सतवां एके साथ। बरिस-२ में, कहे खातिर छवगो अंक निकलल जेकरा में दोसरा से लेके छठवाँ तक के अंक सामिलाते रहे। बरिस-३ से, माने कि ई जब से तिमाही हो गइल तब से, एकर प्रकासन नियमित हो गइल। अपरैल १९८१ ई० से एकर-सम्पादक हो गइलन श्री विश्वनाथ सिंह जी, जिनका देख-रेख में आज ऊ नियमित रूप से छपि रहल बा।

हम जानऽतानी जे खाली 'अकादमी-पत्रिका' के हमार तइयार कइल एह सिलसिलवार-फेहरिस्त से शोध करेवाला लोगिन के काम पूरा ना हो जाई। भोजपुरी में प्रकाशित कुल्हि पत्रिकन के अइसन फेहरिस्त हाली-हाली सामने आवे के चाहीं, अउर ईहो फेहरिस्त तइयार होखे के चाहीं, जे भोजपुरी-भाषा आ साहित्य-संस्कृति का बारे में दोसरा भाषा के पत्रिकन में कहवाँ, केकर, का छपल बा। ई काम आसान नइखे। बाकिर जबले ई पूरा नइखे होत तबले आरम्भ करे खातिर भोज-पुरी अकादमी-पत्रिका में कब, कहवाँ, केकर का छपल बा, देख के एकरा प एक नजर डालल जाय—

—बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्
पटना--४

भोजपुरी अकादमी-पत्रिका (मासिक)

प्रधान-सम्पादक
हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'
सहायक-सम्पादक
भैरवनाथ पाण्डेय
बरिस—१, अंक—१, दिसम्बर, १९७८

(१) निबन्ध

(२) कथा-कहानी-रेखाचित्र

(३) कविता-गीत-गजल

(४) सम्पादकीय

बरिस—१, अंक-२, फरवरी, १९७९

(२) कथा-कहानी-रेखाचित्र

(३) नाटक

(४) कविता-गीत-गजल

बरिस – १, अंक – ३, अप्रिल, १९७९ ई०

(४) सम्पादकीय

वरसि—१, अंक—५, अगस्त, १९७९ ई०

(१) निबन्ध

(२) कथा-कहानी-रेखाचित्र

(३) नाटक

(४) कविता-गीत-गजल

(५) सम्पादकीय

बरीस—१, अंक— ६-७, अक्टूबर-दिसम्बर, १९७९ ई०

(१) निबन्ध—

बरिस—२, अंक २-६, मार्च-दिसम्बर, १९८० ई०



भोजपुरी अकादमी पत्रिका (त्रैमासिक)

सम्पादक : हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'
बरिस—३ अंक-१, जनवरी-मार्च १९८१ ई०

निबंध

(२) कथा-कहानी-रेखाचित्र

(३) कविता-गीत-गजल

सम्पादकीय

भोजपुरी अकादमी पत्रिका

सम्पादक—विश्वनाथ सिंह

वरिस—३, अंक—२, अप्रैल-जून १९८१ ई०

(१) निबंध

(२) कथा-कहानी-रेखाचित्र

(३) कविता-गीत-गजल

(४) सम्पादकीय

वरिस—३, अंक—३, जुलाई-सितम्बर, १९८१ ई०

(१) निबन्ध

(२) कथा-कहानी-रेखाचित्र

(३) कविता-गीत-गजल

(४) सम्पादकीय